नुष्य बनो

انسان بنو

मानवता के मुख्य नियम

भाग दूसरा

संस्थापक

फकीर चन्दजी मह

वता मन्दिर होशियारपुर

मनुष्य के बनो नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल,सुबोध और साधा-रण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म,पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ४-५० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल
सम्पादक व मैनेजर

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्णा मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ।।

❀ मनुष्य बनो ❀

वर्ष २१	पौष सं० २०२९ वि० जनवरी सन् १९७३	सं० ४/२४२

विषयों का त्याग

जब तलक विषयों से ये दिल दूर हो जाता नहीं ।
तब तलक साधक बिचारा सत्य सुख पाता नहीं ।।
जो नहीं एकाग्र कर सकता है अपनी वृत्तियां ।
उसको स्वपने में भी, परमात्मा नजर आता नहीं ।।
क्या हुआ वेदों के पढ़ने से न पाया भेद जो ।
आत्मा जाने बिना, ज्ञानी तो कहलाता नहीं ।।
पाप कर्मों से सदा रहता है जिसका मन मलीन ।
उसको सद्उपदेश यह हरगिज हृदय भाता नहीं ।।
ध्यान से इसको सुनो, जो कह रहे हैंगे कबीर ।
है बिना सद्गुरु के कोई मुक्ति का दाता नहीं ।।

सुनहरी नियम

अपनी निरख परख

पिछले अंक में यह बताया जा चुका है कि जब तक मनुष्य अपने दोषों या अवगुणों की निरख परख नहीं करता है या उनको जान नहीं लेता है तब तक वह उनके दूर करने का भी प्रयत्न नहीं करता। अपने अन्दर बुराइयों या दोषों के रहते हुये मन कभी अविचल नहीं हो सकता, न शाँति प्राप्त कर सकता है। उनको बिना दूर किये सच्चे अर्थों में साधन अभ्यास में भी सफलता प्राप्त होना कठिन है। अब सवाल होता है कि हम अपनी बुराइयों, की निरख परख कैसे करें। इसके जानने की विधि भी कठिन नहीं है।

साधारण रूप से आदमी दूसरों के ही दोषों को देखा करता है। यदि हम किसी चोर, डकैत, शराबी, जुआरी, ऐय्याश आदि को देखते हैं तो उस से मन में कराहियत पैदा होती है और हम तुरन्त उसको बुरी दृष्टि से देखने लगते हैं और उसकी निन्दा करने लगते हैं। उस समय हमको यह देखना चाहिये कि यह दोष हमारे अन्दर तो नहीं है।

दूसरी बात यह है कि जब कोई व्यक्ति या सन्तान हमारी आज्ञा का पालन नहीं करता तो हमको क्रोध आ जाता है और बुरा लगता है। अब देखना यह है कि हम अपने बड़ों की आज्ञा का पालन करते हैं। यदि नहीं करते तो इस अवगुण को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। कहा है कि आज्ञा देने से पहिले आज्ञा मानना सीखो।

प्रत्येक व्यक्ति पर आपत्तियाँ आया करती हैं। आपत्ति के समय दूसरों की सहायता चाहा करता है। यदि किसी ने सहायता करदी तो बड़ा सुखी होता है। इससे यह परिणाम निकलता है कि यदि हम दूसरों की सहायता नहीं करते हैं तो यह हमारे अन्दर कमी है और इसको दूर करना चाहिये और यथाशक्ति दूसरों की भरसक सहायता करनी चाहिये। (क्रमशः)

आवश्यक निवेदनन—जिन भांइयों के पास जनवरी व मार्च १९७२ के "मनुष्य बनो" के अंक हों, कृपा करके भेजदें। बदले में १) की पुस्तक भेजदी जायेगी। बड़ी आवश्यकता है। देवीचरन मीतल, व्यवस्थापक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

Param Dayal ji's letter to America

Dear Mummy and Daddy of my beloved Mam Chand,

Radha Swami.

Your Chrismas Card, showing symbol of peace, is before me. The word "Peace" attracts the minds because every one is desirous of peace in all sphers of life. You have expressed something very high about me. I enter within myself and my inner conscience wants to know whether I have attained peace.

Peace is a state of self where it does not attach itself with any ideal, object, desire or ambition. Please try to follow what I mean. Just imagin the the state of your sound sleep, The state of sound sleep is a symbol of peace. In sound sleep the self remains unconscious, whereas the state of real peace is the sound sleep with full consciousness.

To attain that peace the way which I adopted, is "Love", love of Supreme power. When one loves HIM within himself with full devotion, he, by this process, will automatically reach that peace. Before reaching sphere of peace, he will enjoy the Bliss or "Anand".

You being a pair, it looks awkward to me to give you such an example but the same is best

suited to make you understand the truth. Husband and wife love, serve and allure one another, but after meeting. the emotions of love and happiness finish and feel a satisfaction of their physical desires. In the similar way, the man who wants the eternal peace loves his ideal either in the form of Christ, Rama, Krishna, Guru or in the form of Light and Sound within his brain. When his love goes extreme, he gains the condition of eternal peace. After attainning this once or twice in this life, he remains contented.

I heartily wish to you to enjoy physical, mental and spiritual health and wish that the Supreme power may bless you the true devotion of Him.

yours in Him,

21-12.72

Faqir

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज का अंग्रेजी पत्र का अनुवाद

प्रियवर मामचन्द के प्यारे ममी व डैडी, राधास्वामी

तुम्हारा बड़े दिन का कार्ड शान्ति का प्रतीक, मेरे सामने है। 'शान्ति' का शब्द दिमागों को आकर्षित करता है क्योंकि प्रत्येक जीवन की हर अवस्था में शान्ति का इच्छुक है। तुमने मेरे बारे में बहुत उच्च भाव प्रगट किये हैं। मैं अपने अन्तर में प्रवेश होता हूँ।

मेरा अन्तःकरण जानना चाहता है कि क्या मैंने शान्ति प्राप्त करली है।

शान्ति निज स्वरूप की एक अवस्था है जहाँ यह किसी आदर्श, उद्देश या लालसा से लगाव नहीं रखती। मेरा जो भाव है उसे समझने का प्रयत्न करो। अपनी गहरी नींद की अवस्था के बारे में सोचो। गहरी नींद की अवस्था शान्ति का प्रतीक है गहरी नींद में अपना अपना आया अचेतन्य रहता है मगर वास्तविक शान्ति की अवस्था चेतनता रहते हुए गहरी नींद है।

उस शान्ति के प्राप्त करने के लिये जो मार्ग मैंने अपनाया वह प्रेम है। परम शक्ति से प्रेम। जब कोई उससे अपने अन्तर पूर्ण ध्यान के साथ प्रेम करता है वह इस विधि से स्वयंमेव उस शान्ति की अवस्था में पहुँच जायेगा। शान्ति के क्षेत्र में पहुंचने से पहिले उसे आनन्द मिलेगा।

तुम जोड़ीदार हो। ऐसा उदाहरण देना मुझको भद्दा प्रतीत होता है मगर सचाई को समझाने को सबसे बढ़कर है। पति और पत्नी प्रेम करते हैं। एक दूसरे की सेवा करते हैं किन्तु मिलने के पश्चात प्रेम और खुशी के भाव समाप्त हो जाते हैं और अपनी शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति प्रतीत करते हैं। इसी प्रकार मनुष्य जो अनन्त शान्ति चाहता है, अपने क्रइष्ट से क्रइष्ट राम, कृष्ण, गुरु या शब्द और प्रकाश के रूप में अपने मस्तिष्क में प्रेम करता है। उस शान्ति को जीवन में एक या दो बार प्राप्त करने के बाद वह सन्तुष्ट रहता हैं

मैं हृदय से चाहता हूँ कि तुमको शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ मिले और परम शक्ति तुमको अपनी सच्ची भक्ति प्रदान करे।

आपका
फकीर
२१-११-५६

* चिड़िया *

(ले०—सेठ दुर्गादास, चण्डीगढ़)

मैं एक दिन बरामदे में कुर्सी पर बैठा ही था कि मेरी दृष्टि एक चिड़िया पर पड़ी। वह पानी पी रही थी। मेरा विचार उस ओर गया और निम्नलिखित लेख लिख डाला।

चिड़िया ! तू बड़ी अच्छी है, सुन्दर है और चहचहाती चिड़िया है। प्रकृति ने तरह-तरह के सुन्दर रंग तुमको दिये हैं। फुदककर इधर गई उधर गई। जब तुम उड़ती हो, आकाश की सैर करती हो। तुमको देखकर मेरे मन में भी उमंग पैदा हो उठती है। क्या अच्छा होता कि मैं भी उड़ सकता और आकाश की सैर कर सकता।

तुम कितनी भाग्यशाली हो ! जीविका की तुमको चिन्ता नहीं सताती ! घर की तुमको आवश्यकता नहीं ! जहाँ देखा किसी वृक्ष की डाल पर बसेरा कर लिया।

मेरी दशा को देखो ! प्रतिदिन जीवन की आवश्यकतायें बढ़ रही हैं। घर सामान से भरा पड़ा है। तुमको ऐसे सामान की आवश्यकता ही नहीं। मैं बूढ़ा हूँ, कमजोर हूँ, सेवक की आवश्यकता है। तुम कभी बूढ़ी ही नहीं हुई, न तुमको कभी सेवक की आवश्यकता पड़ी। तुम कितनी स्वतन्त्र हो। खुली वायु में उड़ती हो। तुम अचिन्त हो।

कोई तेरा शत्रु नहीं। कोई तेरा मित्र और सम्बन्धी नहीं। बच्चे पैदा किये। बड़े हुए ! स्वतन्त्र हो गये। कोई लोभ नहीं। कोई मोह नहीं। कोई झगड़ा नहीं। किसी से कोई बैर नहीं। कोई सम्पति नहीं। चोरी का भय नहीं। बुढ़ापे की चिन्ता नहीं। तुम कितनी अच्छी चिड़िया हो ! कोई विचार तुमको सताता नहीं। कोई पाप नहीं किया। कभी भक्ति नहीं की। ज्ञान ध्यान की तुझे परवाह नहीं। तुम ईश्वर के कितनी निकट हो !

मेरी ओर देखो ! जीविका की चिन्ता ! बुढ़ापे की फिक्र, हर एक से झगड़ा ! घृणा, द्वेष, ईर्ष्या हैं। संसार को मैंने शोकागार बना रक्खा है। मैं युद्ध करता हूँ। दुनियां में तबाही लाता हूँ। क्या कहूँ क्या न कहूँ। मनुष्य को मैंने दास बना रक्खा है। दूसरों को आधीन रखना मेरा काम है। मैं लज्जित हूँ कि मैं अपने आपको उत्तम पुरुष कहता हूँ। जब मैं तुझे देखता हूँ मुझे संतोष आ जाता है, शान्ति मिलती है।

ईश्वर ने तुमको कितना अच्छा पहिनावा दिया है। पूरा पर्दा है। गर्मी सर्दी से तुम्हारी रक्षा होती है। कभी मैला नहीं होता। धोबी की आवश्यकता नहीं। तुम कभी बीमार नहीं हुई न कभी डाक्टर की आवश्यकता पड़ी। तुम्हारी मृत्यु पर कोई रोते न देखा। न कभी तेरे जन्म पर खुशियां मनाते देखा। कितना विलक्षण तेरा जीवन है !

मैं अपने पहिनावे में फँसा रहता हूँ। आजकल फैशन बदलता है। मैं फैशन का गुलाम बन चुका हूँ। हर समय रोगी बना रहता हूँ। डाक्टर और अस्पताल मौजूद हैं लेकिन मेरा रोग नहीं जाता। अस्पताल रोगियों से भरे पड़े हैं। मैं ऐसा दुर्भागी हूँ। फिर भी मेरी मृत्यु पर लोग शोक मनाते हैं, रोते हैं। क्यों ऐसा करते हैं मैं स्वयं चकित हूँ। चिड़िया ! तू मुझे बताती कि आखिर जीवन क्या है ? असलियत क्या है ? मैं भी अपना जीवन ऐसा बनाता। अचिन्त होता। मैं भी आकाश की सैर करता। क्या अच्छा होता कि तेरे सब गुण मुझ में आ जाते !

सूचना

अभी तक पिछले वर्ष का चन्दा बहुत से ग्राहकों ने नहीं भेजा है। उनको चाहिये कि इस वर्ष के चन्दे के साथ तुरन्त भेजदें।

* गजल *

(ले०–श्री दयालस्वरूप पीरेमुंगा साहब, दहली)

लो जी रहे हैं सब ही मरने के लिये ।
डूब रहे खुद में तरने के लिये ॥
शुकर है जिन्दगी नहीं जाबिदां ।
वगरना जीना पड़ता सड़ने के लिये ॥
गये थे घबरा के यहां से जो ।
आये करनी भरनी भरने के लिये ॥
माल व दौलत अयाल व रिश्ते सभी ।
असबाब काफी खुद को रगड़ने के लिये ॥
तहरीर खत अपना ही देख हैरान हुये ।
खूब किया सफर खुद को पढ़ने के लिये ॥
कह रहे हैं सब ही होकर लापता ।
आये जो कुछ भी करने के लिये ॥
पैदा कर लेता है दुनियाँ में कई ।
खुद ही खुद में झगड़ने के लिये ॥
कौन कह सकता है कि हम जीते नहीं ।
मौत के हो मुंह में, पड़ने के लिये ॥
मौत से भी नहीं, जो मरते हैं ॥
अड़ गये खुद ही, अड़ने के लिये ।
जाहिर व बातिन की, सब कशमकश ॥
दिल को है दिल में, धरने के लिये ।
समझ आया कुछ भी तो, कुछ नहीं ॥
कौनसी फिर बात डरने के लिये ।
मौज मालिक जबकि है 'पीरेमुंगा' ॥
रहा बाकी फिर क्या, करने के लिये ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

प्रवचन

परमदयाल फ़कीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर ६-११-७२)

सतगुरु प्यारे ने चुकाया, काल का कर्जा हो ।
महर से मोहि सत्संग में खेंचा, भक्ति पौद लगा गुरु सींचा ।
काटे विघ्न और हरजा हो ॥
दया गुरु की परख बढ़त प्रीती, सेवा करत जागत नई प्रीती ।
बढ़त मेरा दिन दिन हरजा हो ॥
शब्द का मार्ग दीना लखाई, सुरत मेरी धुन संग लगाई ।
आज घट गगना गरजा हो ॥
भरम मेट दिये मेरे सारे, कर्म भी काट दिये अति भारे ।
काल भी डर से लरजा हो ॥
राधास्वामी कीन जगत उपकारा, चरन शरण दे जीव उबारा ।
तार दई सब परजा हो ॥

यह बाणियां तुम रोज सुनते हो। मुझे इन बाणियों ने दीवाना बनाया हुआ था। मैं उस अन्तिम पद तक पहुँचना चाहता था। आज इस शब्द को सुनकर ख्याल आया कि फ़कीरचन्द ! क्या तेरा कर्जा उतर गया ? लोग मुझे सतगुरु मानते हैं। मैं सोचता हूँ कि राधास्वामी मत तो कहता है कि सतगुरु काल का कर्जा उतार देता है। क्या तेरा कर्जा उतर गया ? यदि तेरा कर्जा नहीं उतरा तो तुम दूसरों का भी कर्जा नहीं उतार सकते। फिर सत्संग कराने का तुम्हारा क्या अधिकार है ?

अब सवाल यह है कि तेरा कर्जा उतरा या नहीं, मगर मैं समझता हूँ कि मेरा कर्जा उतर गया है। जिस तरह मैं समझता हूं कि मेरा कर्जा उतर गया मैं वह कहता हूँ। कर्जा किसे कहते हैं ? हमने कोई वस्तु किसी से ली और हम उसको काम में लाये। जब तक हम उसको वापिस नहीं करते

तब तक वह हमारे सिर पर कर्जा है। मैं दुनियाँ में आया और दुनियाँ के संस्कार लिये। वह संस्कार दिमाग पर बैठे हुये अपना खेल करते हैं। जब तक वह संस्कार हमारे दिमाग से निकल नहीं जाते तब तक कर्जा नहीं उतरेगा। कोई वस्तु हमने किसी से अस्थायी रूप से ली और उसको अपने प्रयोग में लाये। जब वह वस्तु वापिस करदी तो कर्जा खतम होगया। हम दुनियां में आये और दुनियां के संस्कार लिये कि यह माँ है यह बाप है यह बहिन है यह भाई है। फिर मजहब और पंथ में आये, पुस्तकें पढ़ीं कि यह ऐसा होता है। यह संस्कार ही लिये थे। तो जब तक यह संस्कार समाप्त नहीं होते तब तक कर्जा नहीं उतरता। बहुत सूक्ष्म बात कह रहा हूँ।

काल कर्म का कर्जा क्या है? जितने संस्कार या प्रभाव हमने संसार को देखकर या पुस्तकें पढ़कर लिये हुये हैं वह हमारे दिमाग पर हैं। उनका समाप्त हो जाना ही कर्जा उतरना है।

अभी तक मेरा कर्जा पूरा नहीं उतरा। थोड़ा बहुत बाकी है। इसको उतारने को कृष्णा, आजाद, कृषक जी तथा दूसरे सज्जन जिन्होंने बताया कि मेरा रूप उनकी सहायता करता है और मैं नहीं होता तो यह समझ में आया कि मेरे अन्तर भी शरीर से लेकर भंवर गुफा तक जितने भाव व विचार उठते हैं यह सब कर्जा हैं। कोई विराट से लिया हुआ है, कोई कहीं से लिया हुआ है और कोई कहीं से। कोई रामायण से, कोई गुरु ग्रंथ के पाठ से, कोई इंजील के पाठ से, कोई कुरान के पढ़ने से लिया हुआ है और यही हमारे अन्तर फुरते हैं। कोई कहता है कि स्वप्न में मुझे कोई फल दे गया। किसी को अन्तर में देवी देवता दिखाई पड़ गये और किसी किसी को साँप बिच्छू दिखाई दे गया। यह सब संस्कार हैं। यद्यपि इनका कोई अस्तित्व नहीं है मगर भासते हैं। जब तक हम इनसे छुटकारा नहीं पाते तब तक यह हमारे सिर पर कर्जा है।

एक आदमी हिन्दू हैं। उसको अभ्यास में या स्वप्न में शिव जी दिखाई आते है। एक मुसलमान को फरिश्ता दिखाई आता है। अंग्रेजों को कुछ और दिखाई आता है। यदि शिव जी ही सब कुछ हैं तो सबको शिव जी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ही दीख पड़ना चाहिये था । मैंने एक पुस्तक पढ़ी है । उसमें लिखा है कि
स्विटजरलेंड वाले कहते हैं कि उनके स्वर्ग में अग्नि है । दूसरी ओर मुसलमान
यह कहते हैं कि अग्नि नर्क में है और स्वर्ग में खजूर और हूरें होती हैं और
गुलाम होते हैं । हिन्दू यह कहते हैं कि स्वर्ग में अप्सरायें होती हैं । आम
और जामुन के वृक्ष होते हैं । वहाँ दूध और शहद की नदियाँ बहती हैं
लेकिन मुसलमानों में आम और जामुन का उल्लेख नहीं है क्योंकि जब यह
हालात लिखे गये होंगे तो उस समय अरब वालों को आम और जामुन का
पता नहीं होगा ।

इन सब के विचारों में भिन्नता क्यों है ? चूंकि स्विटजरलेंड में बर्फ
पड़ती है, और अग्नि से उनको आराम मिलता है अर्थात् अग्नि से उनको
प्रेम है, इसलिये वह कहते हैं कि स्वर्ग में अग्नि है । अरब चूंकि गर्म देश
है और गर्मी उनको सताती है इसलिये वह कहते हैं कि अग्नि नर्क में है स्वर्ग
में नहीं होती । खजूर चूंकि उनका स्वादिष्ट भोजन है इसलिये वह कहते
हैं कि स्वर्ग में खजूर होती है । इसी प्रकार हिन्दू कहते हैं कि स्वर्ग में दूध
और शहद की नदियाँ हैं । इससे सिद्ध हुआ कि जो वस्तु जिसको प्रिय है
वह उसी वस्तु को स्वर्ग में बतलाता है । यह सब संस्कार और विचार हैं ।

सतगुरु प्यारे ने चुकाया, काल का कर्जा हो ।

हुजूर महाराज ने स्वामी जी महाराज का कर्जा कैसे उतारा, यह उनको
ही ज्ञात होगा । इस प्रकार की बाणियाँ पढ़कर हम लोग राधास्वामी मत
या गुरु मत में शामिल होकर पागल होगये हैं । हम लोग अपनी जायदादें
देते हैं और नाक रिगड़ते हैं । मेरा कर्जा कैसे उतरा ? मैंने प्रण किया था
कि अपना अनुभव कह जाऊँगा । हो सकता है कि जो कुछ मैंने समझा वह
गलत हो । मुझे कोई दावा नहीं है । जब से मुझे यह ज्ञान हुआ कि मेरा
रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है लेकिन मैं तो होता नहीं तो मुझे यह
निश्चय हो गया कि मेरे में भी सहसदलकंवल से लेकर महासुन्न तक जो
कुछ भी दिखाई देता है यह सब संस्कार है । चूंकि मैंने पढ़कर, सुनकर या
पिछले कर्मों के अनुसार जो संस्कार लिये हुये हैं और मुझे मालुम होगया

है कि यह सब माया है इसलिये अब मैं इनको ग्रहण नहीं करता और इनके प्रभाव से प्रभावित नहीं होता है लेकिन किसी समय स्वप्न में मुझ पर भी असर हो जाता है। इनका अपनी सुरत पर प्रभावित न होना ही कर्जा उतरना है। मैंने तो अपना कर्जा इस तरह उतारा है।

दातादयाल जी से मैं प्रेम करता था और वह भी मुझसे बड़ा प्रेमकरते थे। चूंकि बात मेरी समझ में नहीं आती थी इसलिये उन्होंने मुझे असलियत के समझाने के लिये गुरुयायी का काम दिया। अब भेद मेरी समझ में आ गया और मुझे विश्वास हो गया कि यह संस्कार ही माया है। जब यह विश्वास होगया कि संस्कार ही माया है तो अब मेरी सुरत कहाँ जायेगी? अपने आप में और अपने निजस्वरूप में जायगी। जब यह रूप रंग, भाव विचार समाप्त हो जाते हैं तो केवल शब्द बाकी रह जाता है। वही हमारा अपना शब्द है और वही अपना नाम है। अभी मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ। आगे का पता नहीं।

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर, ३—९—७२)

साधो गुरु शरणागत आओ ॥
बिन गुरु दया विवेक न सूझे, ज्ञान गुरु संग पाओ।
तज अनेक को एक लखो तुम, एक में चित ठहराओ ॥
सत में एक अनेक कहां है, भरम मोह बिसराओ।
द्वैत अद्वैत में भूल भरम है, चित से भरम हटाओ ॥
भरम मिटे तब सार लखे कोई, सतसंग भरम मिटाओ।

सुरत शब्द का साधन सीखो घर में नाद बजाओ ॥
झलकी ज्योति की अन्दर धारा, देख देख हरषाओ ।
राधास्वामी चरन शरण बलिहारी, गुरुपद शीश झुकाओ ॥

——:o:——

साधो पारख शब्द विचारे ॥
जौहरी ज्यों हीरे को परखे, साधो शब्द नहावे ।
निरख परख चल घट के मारग, जाय द्वन्द्व से पारे ॥
अपती करनी पार उतरनी, कथनी सब तज डारो ।
रहनी से जो ध्यान लगावे, काल कर्म तिहि हारे ॥
राधास्वामी चरन शरण बलिहारी, रहे गुरु के सहारे ॥

मेरा अपना जीवन मेरे सामने है ।

साधो गुरु शरणागत आओ ॥
बिन गुरु दया विवेक न सूझे, ज्ञान गुरु संग पाओ ॥

यह बिल्कुल ठीक है । मैं सन् १९०५ ई० में दातादयाल महर्षि शिवब्रत-लाल जी महाराज की शरण में गया था । विवेक आ गया । उनके समय में तो इतना विवेक नहीं आया जितना कि गुरु पदवी पर आने से प्राप्त हुआ । यह उनकी दया थी । उन्होंने विवेक देने के लिये मुझे यह काम दिया था । जब मुझे यह ज्ञान हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होकर उनकी सहायता करता है, मरते समय ले जाता है, अमरीका, अफ्रीका और इगलेंड में कई-कई कारनामे मेरे नाम से बताये जाते हैं तो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तुमको क्या विवेक मिला ? मैं तो कहीं जाता नहीं और न मुझे ऐसी घटनाओं की कोई जानकारी होती है । मुझे तो यह समझ आई है कि जो कुछ किसी के अन्तर फुरनायें फुरती हैं वह केवल प्रभाव और संस्कार हैं जो जीव के दिमाग पर कुछ पिछले जन्मों और कुछ इस जन्म के कर्मों से या देखने सुनने या वार्तालाप से पैदा होते हैं । यह उनका परिणाम है । किसी समय यह रूप अच्छाई की ओर और किसी समय बुराई की ओर ले जाते

हैं। यह कभी रामचन्द्र जी का, कभी कृष्ण जी का, कभी बाबा फकीर का और कभी किसी का रूप बना लेते हैं। यह सब मनुष्य के अपने विश्वास के अनुसार बनते हैं। किसी समय इनका कहना सच भी हो जाता है और कभी झूँठ। जैसे थोड़े दिन हुये आप लोगों ने समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि एक आदमी के अन्दर उसका बाप प्रगट हुआ और उसने कहा कि तुम पर देवी क्रोधित है। देवी ने कहा है कि तुम अपने तीनों लड़कों का बलिदान करदो। देवी तुम पर प्रसन्न हो जायगी और तुम सबका कल्याण हो जायगा। उस आदमी ने तीनों लड़कों के कत्ल करने का प्रबन्ध किया लेकिन दो लड़के तो बच गये और एक को उसने कत्ल कर दिया। अब वह जेल में है।

उस आदमी के अन्तर जो उसका बाप प्रगट हुआ क्या वह उसका बाप था ? क्या देवी ने उसके बाप को कहा था ? नहीं ! यह केवल उसके अपने ही मन के गलत भाव थे। इसलिये संत मत में इस बात पर जोर दिया जाता है कि किसी जीवित पूर्ण पुरुष की शरण में जाओ।

पहिले किसी बाहर गुरु की शरण में जाओ जो कि पूर्ण हो। गलत शिक्षा देने वाले गुरु नहीं है। यह सब अपनी गद्दी और अपने मान प्रतिष्ठा के लिये गलत उपदेश देकर अपने जाल में फँसाते हैं। मैं गुरु की शरण में गया था। गुरु ज्ञान प्राप्त करने से मुझे जो अनुभव प्राप्त हुआ, वह अपने प्रण अनुसार वर्णन करता रहता हूँ मगर मुझे दावा किसी बात का नहीं। मेरा अनुभव कहता हैं कि गुरु के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो और विवेक प्राप्त करो लेकिन चूंकि हर जगह पर मन बुद्धि काल और माया का खेल हैं और हम इसमें फँसे हुये हैं इसलिये जब तक तुम्हारा अपना अनुभव गुरु की बात के कथन के साथ मेल नहीं खाता तुमको विवेक नहीं आयेगा। सत्संग में तुमको अनुभव कराया जाता है। अब मुझे ज्ञान तो होगया और थोड़ी देर के लिये अनुभव आनन्द भी मिल गया लेकिन गुरु ज्ञान के मिलने से क्या मुझे शान्ति मिल गई ?

साधो पारख शब्द विचारे।
जौहरी ज्यों हीरे को परखे, साधो शब्द निहारे॥

॥ मनुष्य बनो ॥

शब्द का निहारना यह है कि दुनियाँ की जो समझ बूझ है उसको
विचारो । यदि किसी के अन्दर देवी या देवता प्रगट होता है तो वह सिर
मारने लग जाता है और दुनियाँ उसके पीछे फिरने लग जाती है । चूंकि
मेरा अनुभव मेरे साथ था फिर सत्संगियों की बातें सुनीं तो विचार किया ।
ज्ञान हो गया । इस ज्ञान के प्राप्त होने से अनुभव आनन्द मिलता है लेकिन
जब तक सुरत को कहीं ठहरने का ठिकाना नहीं मिलता है तुम दुख सुख से
बच नहीं सकते, चाहे तुमको लाख ज्ञान हो जाय । अब बुढ़ापा आ गया है ।
पेशाब की तकलीफ रहती है मगर यह ज्ञान मेरी सहायता नहीं करता ।
इतना ज्ञान होते हुये मुझे दिमागी कमजोरी ठहरने नहीं देती । इसलिये
यह सत्संग मेरे ही लिये हैं । तकलीफ है । दवा खाता रहता हूं, शायद
आपरेशन हो । पता नहीं क्या होगा । मेरे हाथ में कुछ नहीं है । वह जाने
और उसकी मौज ।

फिर ज्ञान को छोड़कर शब्द गुरु का सहारा लेना पड़ता है । अब निचले
ज्ञान तो समाप्त होगये । अब मैं दुनियाँ को अपना अनुभव कहना चाहता हूँ
कि मेरी तरह ज्ञान प्राप्ति की कोशिश मत करो । यह मार्ग केवल विशेष-
विशेष जीवों के लिये है । 'नानक कोटिन में कोई' के लिये है । इसलिये
केवल एक का सहारा लो । ज्ञान प्राप्ति के बाद भी तो मुझे सहारा लेना
पड़ता है । यदि पहिले से ही सहारा लिया हुआ हो तो अच्छा है । यह मेरी
रहनी है । अमली जीवन है ।

अपनी करनी पार उतरनी, कथनी सब तज डारे ।
रहनी से जो ध्यान लगावे, काल कर्म तिहि हारे ॥

रहनी क्या है ? हमारी सुरत का किसी एक जगह पर जाकर ठहर
जाना ही रहनी है । जो आदमी अपने अन्तर में एक जगह को मानकर उसमें
अपनी सुरत को ठहरा देता है वह उसकी रहनी है । मत्थे टेकना या तिलक
लगाना रहनी नहीं है ।

ऐ संसार वालो ! मेरी तरह ऊँचे जाने की कोशिश मत करना । यह
किसी विशेष-विशेष जीव के लिये है । एक का सहारा लो । हिन्दू हो तो

राम या कृष्ण का सहारा लो। मुसलमान हो तो हजरत मुहम्मद का सहारा लो और यदि पंथाई हो तो गुरु का सहारा लो मगर एक का सहारा लो। आजकल के हालात ऐसे हैं कि यदि एक आदमी देवी की पूजा करता है तो दूसरा आदमी आकर उसका खंडन करता है। इससे देवी के पूजने वाले का विश्वास टूट जाता है। एक आदमी का मुझ पर विश्वास है और बाबा हरचरनसिंह जी का मानने वाला मेरी बुराई करता है तो उसका विश्वास टूट जाता है। ऐसे ही कुल संसार की दशा है। लेकिन यह है क्या ? भ्रम। इसलिए मैंने इस भ्रम को दूर करने के लिए दुनियां को सचाई प्रकट की है ताकि जीव का विश्वास न टूटे कि ऐ मानव ! जिसका तू सहारा लेता है वह तेरे विश्वास के अनुसार तुझको फल देगा। यदि विश्वास कमी है तो फल में कमी होगी। यदि विश्वास नहीं है तो फल भी नहीं हैं। कलियुग में अर्थात् बुद्धि के युग में केवल नाम की महिमा है। इसमें शब्द बताये गये हैं। यदि शब्द समझ में नहीं आता तो अपने गुरु के स्वरूप को मान लो। तुमको जो कुछ मिलता है तुम्हारे श्रद्धा विश्वास से मिलता है। गुरु से नहीं मिलता। यह है विवेक जो कुछ मिला।

तुम लोग हाथ जोड़कर गुरु के आगे नाक रिगड़ते हो। क्या ऐसा करने से तुमको विवेक आ जायेगा ? गुरु के बचनों को सुनने समझने और उन पर क्रियात्मक होने से तुमको विवेक प्राप्त होगा। इसलिए किसी अनुभवी पुरुष का सत्संग प्राप्त करो। मैंने ऐसे गुरु भी देखे हैं जिनका शब्द और प्रकाश भी नहीं खुला हुआ है।

तज अनेक को एक लखो तुम, एक में चित ठहराओ।

एक को मानो चाहे किसी को मानो। मैं यह नहीं कहता कि इसको छोड़ो और उसको ग्रहण करो। यदि मुझे यह काम करना होता तो मैं भी दूसरों की तरह नाम दान का सिलसिला शुरू कर देता किन्तु मैं हूँ संत सतगुरु वक्त। सत्संग से बात को समझकर एक नाम को पकड़ो चाहे कोई भी नाम है। असली नाम क्या हैं ? सुरत के ठहराव का नाम 'नाम' है। इस ठहराव की अवस्था का नाम 'नाम' है। शेष सब साधन हैं।

जिस अवस्था में जाकर मनुष्य शारीरिक, मानसिक भान बोध को भूल जाता है उसका नाम है 'सत'। जब मुझे तकलीफ होती है तो मैं शरीर को नहीं भूल सकता। तब मुझे रूप और नाम का सहारा लेना पड़ता है। फिर ऊँचे जाना पड़ता है। यह संतों का मार्ग है। मैंने संतों के हालात पढ़े है और देखे भी हैं। मैं एक बार दातादयाल जी के दरबार में गया और उनके चरणों पर सिर रख दिया। पाँव पर चोट लगी थी और घाव था। उन्होंने 'हाय' कहा। मैंने पूछा कि क्या बात है महाराज ! कहने लगे फकीर ! पाँव पर चोट लगी है। घाव है। तो मैं कैसे मानूँ कि संत को दुख नहीं होता। जब तक किसी की सुरत देह में है उसको सब कुछ महसूस होता है किन्तु नींद के समय कोई विशेष कष्ट नहीं होता। क्या कोई संत २४ घण्टे समाधि में रह सकता है ? नहीं।

मैंने गुरु भक्ति की, सेवा की, अभ्यास भी किया और शब्द भी सुने। अब जब शारीरिक रोग होता है तो मेरा सारा ज्ञान ध्यान समाप्त हो जाता है। मैं सचाई वर्णन कर रहा हूँ। दूसरे महात्मा बताते नहीं ताकि उनकी शुहरत को धक्का न पहुँचे। मैं दुनियां में ख़ास मिशन लेकर आया हूँ। मैं ज्ञान दे रहा हूँ कि जब तक शरीर है एक का सहारा पकड़ो। यह नहीं कि तुम खुदा बन गये हो या तुम ब्रह्म बन गये हो। मैंने जो ज्ञान प्राप्त किया वह कहता हूँ। जो ड्यूटी मुझे मिली थी उसको पूरा कर दिया। गलती से अगर मैंने कोई बात कहदी तो उसके लिये मैं अपराधी नहीं हूँ क्योंकि मेरी नीयत साफ है।

जब तक जीवन है एक का सहारा लो। शरीर में हो तो शरीर का सहारा लो। मन में हो तो मन का सहारा लो और आत्मा में हो तो प्रकाश का सहारा लो। 'अहं ब्रह्मास्मि' एक वहम है। ८५ वर्ष की आयु होगई है और अब अनुभव बढ़ रहे हैं। सहारा चाहे किसी का हो, इसमें कोई अन्तर नहीं है। मगर ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी पूर्ण गुरु की संगत में जाना पड़ेगा जो रूप तुम्हारे अन्तर प्रगट होते हैं वह तुम्हारे अपने मन के ही बनाये हुए हैं। इसलिए ज्ञान प्राप्ति के लिए किसी पूर्ण गुरु की शरण में

जाओ मगर कठिनाई यह है कि पूर्ण गुरु की संगत भी ध्यान से नहीं करते।

निरख परख चल घट के मारग, जाय द्वन्द से पारे।
अपनी करनी पार उतरनी, कथनी सब तज डारे॥

जब द्वन्द समाप्त हो जाता है तो संकल्प उठने बन्द हो जाते हैं। तुम लोग जाते हो और नाम ले लेते हो लेकिन यह कहना कि गुरु तुमको अन्त समय ले जायगा यह एक धोखा है। करनी तो तुमको करनी है और रहनी में जाना है। रहनी है किसी का सहारा लेना मगर जीवों के मन में संशय हैं। कोई कहता है कि व्यास अच्छा है कोई कहता है कि आगरा अच्छा है। कोई कुछ कहता है कोई कुछ किन्तु मैं कहता हूँ कि यदि तुम सच्चे हो तो तुम्हारा गुरु भी सच्चा हैं और तुम्हारा नाम भी सच्चा है।

रहनी से जो ध्यान लगावे, काल कर्म तिहि हारे।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, रहे गुरु के सहारे॥

सुरत का किसी जगह ठहरना ही रहनी है। ज्ञान हो जाने के बाद भी किसी एक का सहारा लेना पड़ता है। आज सारी रात दातादयाल जी के रूप का सहारा लेता रहा। यह प्रकृति है। कभी नाम में कभी रूप में और कभी शब्द में जाती रहती है। और कभी कहीं भी नहीं ठहरती। उस समय मालिक के आगे पुकार करनी पड़ती है।

मैंने जो कुछ कहा है वह अपने जीवन के अनुभव के आधार पर कहा है।

सन्त बाणी

सबसे आवश्यक बात यह है कि सम और दम करो। मन और इन्द्रियों को वश में करो। मन इन्द्रियाँ प्रबल न होने पायें। इस पतन में लग जाओ। फिर स्वयं रास्ता निकल आयेगा।

प्रवचन

परमसंत परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर १५—९—७२)

जो कोई या विधि प्रीति लगावै ।
गुरु का नाम ध्यान न छूटै, परगट ना गोहरावै ॥
कुरम सुतन को धरत है ऊँचे, आप उदर को धावै ।
निस दिन सुरत रहे अंडन में, पल भर ना विसरावै ॥
जैसे चातक रटे स्वाँति को, सरिता निकट न आवै ।
दीन दयाल लगन हितकारी, स्वांति जल पहुंचावै ॥
फूट सुगन्ध कंज की जैसे, मधुकर के मन भावै ।
होगई साँझ बँध गये सम्पुट, ऐसी भगति कहावै ॥
जैसे चकोर शशी तन निरखे, तन की सुधि विसरावै ।
शशि तन रहित एक टक लागे, तब शीतल रस पावै ॥
ऐसी जुगति करे जो कोई, तब सो भगत कहावै ।
कहें कबीर सतगुरु की मूरति, तेहि प्रभू दरस कहावै ॥

रहना नहिं देश विराना है ॥
यह संसार कागद की पुड़िया, बूँद पड़े घुल जाना है ॥
यह संसार काठ की बाड़ी, उलझ उलझ मर जाना है ॥
यह संसार झाड़ और झोंकर, आग लगे बर जाना है ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है ॥

मैं अब इस योग्य नहीं रहा कि आप लोगों को सत्संग कराऊँ। मैंने सारा जीवन पंथ में बिताया। इस शब्द में लिखा है कि यह देश विराना है और यहाँ किसी ने रहना नहीं है। इस बात को सब जानते हैं और

मानते हैं। मैं भी अच्छी तरह जानता हूँ। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार को बता जाऊंगा। क्यों प्रण किया था ? यह मुझे पता नहीं। मालिक की मौज थी।

यह तो ठीक है कि यह देश विराना है मगर मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि क्या तुमने वह असली देश देखा है ? मैं उस देश की खोज करता रहा हूँ। पहिले मैं उस देश को यह समझता था कि वहाँ चन्द्रमा, सूर्य है ? ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं और देवी और देवता हैं। मैं वहाँ के दृश्य भी अभ्यास में देखा करता था। जब कोई दृश्य दृष्टिगोचर होता था तो मैं बड़ा प्रसन्न होता था कि मुझे कोई देश मिल गया है मगर अब मेरा वह अनुभव गलत सिद्ध हुआ। जो दृश्य मैं अपने अन्तर देखता था और यह समझता था कि यह कोई लोक है जैसे कि कबीर ने भी लिखा है कि कहीं संतों का देश है, कहीं भक्तों का देश है, कहीं मान सरोवर है, कहीं यमराज और धर्मराज है। मैं भी इनको देखा करता था मगर अब मेरा अनुभव इसके बिल्कुल विपरीत है। कैसे ?

श्री ज्ञानचन्द जी राजस्थान में नहर विभाग में इन्जीनियर हैं। वह मेरे बड़े प्रेमी हैं और मेरा ध्यान करते हैं। कई वर्ष पहिले जब वह मेरे सम्पर्क में आये तो उस समय वह एस० डी० ओ० थे। उनका मुझ पर विश्वास बैठ गया। वह तरक्की कर गये। अब वह सुपरिटेंडिंग इन्जीनियर हैं और आत्म अनुभव चाहते हैं। कल उनकी एक चिट्ठी आई। वह लिखते हैं कि बाबा जी ! मैंने साधन में आपको देखा। आप गरीबों और कोढ़ियों की सेवा कर रहे थे। मैं भी वहां था। आपने बड़े प्रेम से मेरे सिर पर हाथ फेरा। वह लिखते हैं कि यह क्या मामला है। यह भी लिखा कि यदि आप आज्ञा दें तो मैं गरीबों के लिये कुछ रुपये और कपड़े भेजदूँ।

जो कुछ उसने देखा वह क्या था ? अगर मैं वहाँ होता तो मुझे भी ज्ञात होना चाहिये था। जो आदमी ऐसे दृश्य अपने अन्तर देखते हैं अर्थात् कोई कहता है कि मैंने अपने अन्तर राम को देखा, कोई कहता है कृष्ण जी के दर्शन किये, कोई कहता है कि वहाँ देवी या देवताओं को देखा तथा

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

किसी ने गुरु के दर्शन अन्तर में किये। वह उन वस्तुओं को अपना-अपना देश समझते हैं। अब मैं कैसे मानूँ कि वह-वह देश है। जो कुछ भी कोई देखता है वह उसके इस जन्म के तथा पूर्व जन्म के संस्कार हैं। मैं मालिक को ढूंढ़ने निकला था, जिसको मैं वह देश समझता था और जिसको अपने अन्तर में गुरु समझता था वह तो मेरे अपने ही मन का रूप निकला।

कल उज्जैन से एक आदमी की चिट्ठी आई। वह लिखता है कि जब आप पिछली बार आये थे तो आपने रेलवे स्टेशन पर मेरी स्त्री के लिए प्रशाद के रूप में एक सेब दिया था। जब मैं घर आया तो मेरी स्त्री ने मुझसे कहा कि मेरे लिये बाबा जी ने जो सेव दिया था वह मुझे देदो। मैंने अपनी स्त्री से पूछा कि तुमको कैसे मालुम हुआ? कहने लगी कि अभी थोड़ी देर हुई मैं सोई हुई थी तो स्वप्न में बाबा जी ने आकर मुझे कहा कि मैंने तुम्हारे पति को एक सेव दिया है। मैं हैरान होगया और मैंने वह सेव उसको दे दिया। उसने बड़े प्रेम से खाया और अब मेरे यहाँ २६-८-७२ को लड़का हुआ है। यह आपकी बड़ी कृपा है। इससे पहिले मेरे कोई लड़का नहीं था। इस आदमी ने बच्चों की जन्म कुण्डली भी भेजी है। मैंने उस पर एक लेख 'मनुष्य बनो' में प्रकाशित होने लिये भेजा है।

रहना नहिं देश विराना है।

यह देश बेगाना है। हम तो यह समझते हैं कि सहसदलकंवल या त्रिकुटी आदि के दृश्य या चन्द्र सूर्य जो हम अपने अन्तर देखते हैं यह हमारा देश है। अब मेरे सामने अनुभव हैं, लोग कहते हैं कि हमने अभ्यास में सूर्य चन्द्र तारागणों और देवताओं के बीच मे कंवल के फूल पर बैठे हुये आपको सत्संग कराते हुये देखा है। लेकिन मुझे तो पता नहीं इसलिये मैं इस परिणाम पर आया कि यह जितने दृश्य अन्तर में आते हैं यह हमारा अपना देश नहीं है। यह काल और माया का देश है। माया है बुद्धि। जिस-जिस प्रकार के विचार मनुष्य को सुनने गुनने या पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण इसके सूक्ष्म शरीर या चिदाकाश पर पड़े हुये हैं वही फुरनायें फुरती हैं।

कल 'हिन्द' समाचार पत्र में एक लेख छपा है कि पाँच साल का एक लड़का जो पहिली कक्षा में पढ़ता है वह शराब खाने पर गया। शराब और माँस माँगा। उन्होंने दे दिया। वह डेढ़ पाव शराब पी गया और एक प्लेट माँस खा गया। लोग देखकर चकित होगये। लड़के ने कहा कि अचम्भे की कौनसी बात है। मैं तो इन चीजों का आदी हूँ। मैं और मेरा चचा तो रोजाना ही शराब पिया करते थे। हमारा अमुक जगह पर कारखाना है। मेरी दो स्त्रियाँ थीं। वह दोनों आपस में झगड़ा करती रहती थीं। एक दिन क्रोध में आकर दोनों को गोली से मार दिया और स्वयं जीप लेकर भाग गया। पुलिस मेरे पीछे थी। मेरा एक्सीडेंट होगया और मैं भी मर गया। अब मैं यहाँ पैदा हुआ हूँ।

मैं हूँ रिसर्चर। सारी आयु खोज में बीती है। छोटी आयु से मालिक को मिलने निकला था। कभी राम को कभी कृष्ण को मालिक मानता था। अब जो मेरे पहिले साधन थे सब समाप्त होगये। किसने समाप्त किये ? ज्ञान ने। ज्ञान यह है कि सहसदलकंवल से लेकर भंवर गुफा तक सबका सब काल और माया है। कबीर साहब ने भी कहा है कि चौदह लोक तक काल बसता है। तुलसीदास जी भी लिखते हैं:—

गो गोचर जहाँ तक मन जाई।
माया कृत सब जानो भाई॥

इसलिये यह देश तो नाशवान है। फिर हमारा देश कहाँ है ? जिस तरह स्थूल वस्तु नाश हो जाती है इसी तरह सूक्ष्म माया है। एक सूक्ष्म माया हमारे अन्तर में है और एक सूक्ष्म माया संसार की है जैसे सूर्य, चन्द्र, तारे आदि। जिस तरह हम अपने अन्तर में सूर्य चन्द्र आदि देखते हैं ऐसे ही यह भी देखते हैं मगर यह भी हैं नहीं इसलिये इस खोज मे लगा रहता हूँ कि हमारा देश कौनसा है। चूंकि मुझे निश्चय होगया है कि सहसदल-कंवल से लेकर भंवर गुफा तक प्रलय है इसलिए मेरे सामने अब जो रूप आते हैं मैं उनमें फँसता नहीं और मालिक की खोज करता रहता हूँ। यह देश बिगाना है। मेरी 'मैं' इस शरीर में है। वह त्रिकुटी में आकर लाल

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

रंग को देखती है मगर वह भी नाशवान है। शब्द भी सुनता हूँ और प्रकाश को भी देखता हूँ मगर में समझता हूँ कि प्रकाश को नाश है क्योंकि प्रकाश भी पैदा होता है। जो वस्तु शब्द और प्रकाश को पैदा करती है वह हमारा घर है और वह अगाध और अनाम है।

अब इस ज्ञान से मुझे लाभ क्या है ? अपने अस्तित्व को खोकर लय हो जाना ही अपने घर पहुँचना है। उस घर को प्राप्त करने से हमें क्या मिलेगा ? वह जो मेरे अन्तर भ्रम था कि मेरा घर है और जो उसकी खोज की मेरे अन्तर चाह थी वह सब समाप्त होगये। किसी भ्रम और संशय के समाप्त हो जाने से ही शान्ति मिलती है। हमारा ध्येय ही शान्ति है। इस ज्ञान के प्राप्त हो जाने से क्या मुझे मालिक मिल गया ? मालिक तो अकह, अपार, अगाध और अनामी है शेष जिसको भी मैं मालिक समझता था वह सबका सब माया है। है नहीं मगर भासती है। जो आदमी मुझे अपने अन्तर सूर्य चन्द्र देखते हैं तो जब मैं ही नहीं होता तो इससे सिद्ध हुआ कि वह सूर्य चन्द्रमा भी नहीं हैं। वह जो कुछ अपने अन्तर में देखते हैं, वह सब संस्कार हैं। चूंकि वह लड़का दुर्घटना में मरा था इसलिए उसके जीवन के संस्कार समाप्त नहीं हुए थे। तब ही तो कहते हैं कि बूढा आदमी जब मरता है तो उसके पोतो के गले में चाँदी की सीढ़ी बनवाके डाल देते हैं। लोगों का यह विश्वास है कि ऐसा करने से वह बूढ़ा स्वर्ग को चला जाता है। वह स्वर्ग को तो जायगा ही क्योंकि सांसारिक शारीरिक कष्टों के कारण उसको इस संसार से पहिले ही वैराग हो चुका है। इसलिए वह संसार में फिर कैसे आयेगा। धन्य हैं वह लोग जिनको अपने सम्बन्धियों से और इस संसार से वैराग हो जाता है और कोई आसक्ति नहीं रहती।

इश शब्द में लिखा है कि यह देश बेगाना है। मैं अपने आप से पूछता हूँ कि तुम दुनियाँ को सत्संग कराते हो, तुमको क्या मिला और क्या तुमने वह देश देखा है ? मैंने भी पहले अपने अन्तर में कभी भगवान राम को देखा कभी श्री कृष्ण जी को देखा, ब्रह्मा, विष्णु, महेश देखे। शब्द सुने और प्रकाश देखे मगर अब सिद्ध होगया कि वह मेरा देश नहीं है। वह तो संस्कार

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

थे। वह दृश्य मेरे अन्तर में क्यों नहीं आते ? वह तो केवल रामायण, भागवत, गीता या दूसरे ग्रन्थों के संस्कार थे। बाहर से कोई किसी के अन्तर नहीं आता। इस भ्रम में आकर मानव जाति हजारों धर्म सम्प्रदायों में बट गई और आपस में घृणा पैदा हो गई जिसका परिणाम पाकिस्तान, इसरायल, आदि हैं। चूंकि ज्ञानदाता कोई नहीं है और अज्ञान दिन दिन बढ़ रहा है इसलिये यह सब झगड़े हैं।

दृश्य तो अब भी मेरे अन्तर आते हैं लेकिन वह वह दृश्य हैं जिनका संस्कार अभी तक दिमाग में मौजूद हैं। कई ऐसे भी संस्कार हैं जो बचपन से ही मेरे दिमाग पर पड़े हुये हैं। मैंने लाख कोशिश की कि वह चले जाँय मगर वह अभी तक भी किसी समय उभर आते हैं। वह त्रिकुटी के स्थान पर चित्रित हो चुके हैं। जैसे कि मेरे पास कैमरा हो और मैं उसको तुम्हारे सामने कर दूं तो तुम्हारा फोटो उतर आयगा। यदि कैमरा न भी हो तो भी तुम्हारा अक्स तो मुझ पर पड़ेगा ही। हमको वह दिखाई दे या न दे यह दूसरी बात है। ऐसे ही हम जो कुछ पढ़ते हैं, सुनते हैं या देखते हैं तो वह सब अक्स हमारे चिदाकाश पर पड़ते हैं। इसलिये जब हमारी सुरत दिमाग में चली जाती है तो वह अक्स उसको दिखाई आते हैं। तुम उनको रोक नहीं सकते।

जो संस्कार प्रबल होते हैं वह सामने आते रहते हैं और जो कमजोर संस्कार होते हैं वह दबे रहते हैं। जब सामने के संस्कार समाप्त हो जाते हैं तो दूसरे संस्कार सामने आते हैं। जैसे जब तक गुरु प्रेम का संस्कार प्रबल है तो गुरु मूर्ति सामने आती रहेगी। जब वह संस्कार समाप्त हो जायगा तो दूसरे संस्कार रूप बना कर सामने आने शुरू होंगे। उनको कोई रोक नहीं सकता। जब तक आदमी शरीर में रहता है उसके दिमाग पर अक्स पड़ते रहते हैं। यदि किसी को गुरु का या भगवान का प्रेम है तो वही तुम्हारे सामने आता रहेगा। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि तुम लोग कहते हो मन काबू में नहीं आता। आयगा कैसे ? वह तो तब आयेगा जिसको ऐसी लगन हो जैसे कबीर साहब ने कहा है :—

॥ मनुष्य बनो ॥

जैसे चातक रटे स्वाँति को, सरिता निकट न आवे ।

जब तक किसी को अच्छे विचार से तुम्हारी प्रबल लगन लगी है तो जो तुम्हारे पुराने विचार के नक्शे तुम्हारे दिमाग पर पड़े हैं वह तो आते ही रहेंगे चाहे कोई सन्त हो या परम सन्त हो। मुझे अपने बारे में याद है कि जब मैं बाबा सावनसिंह के दरबार में गया था तो तीन साल तक उनका अक्स मेरे अन्तर आता रहा क्योंकि मैं प्रेम से उनके पास गया था। यह अक्स का आना दो तरह से बन्द हो सकता है। या तो प्रबल लगन हो तो फिर यह अक्स या नक्शे नहीं आयेंगे या ज्ञान हो कि यह सब माया है। जिस को यह ज्ञान हो जाता है उसके सामने यदि दृश्य आयेंगे भी तो भी वह उन में फँसता नहीं और उसको शान्ति मिल जाती है।

जैसे चातक रटे स्वाँति को, सरिता निकट न आवे ।
दीन दयाल लगन हितकारी, स्वाँती जल पहुँचावे ॥

मांग और पूर्ति का नियम काम करता है। मनुष्य की प्रबल इच्छा का पूरा होना अवश्यम्भावी है। कानून कुदरत काम करता है मगर मांग (demand) सच्ची होनी चाहिये। माँगो और मिलेगा।

फूटी सुगन्ध कञ्ज की जैसे, मधुकर के मन भाई ।
होगई साँझ बंध गये सम्पुट, ऐसी भर्गात कहावे ॥

दुनियां में एक भक्ति है और एक ज्ञान है। यदि ज्ञान न हो तो भक्ति वाला भी गिर सकता है। यह मैं ही जानता हूँ कि जब दाता दयाल के चरणों में गया था तो मेरा कितना भाव था और उनसे कितना प्रेम था। कोई भाव (जज्बा) हमेशा नहीं रहता। उसमें कमी बेशी आती रहती है और वह बदलता रहता है।

जैसे चकोर शशी तन निरखे, तन की सुधि बिसरावे ।
शशि तन रहत एक टक लागो, तब शीतल रस पावे ॥

यह अनाम गति की अवस्था है। जब तक तुम भक्ति से, ज्ञान से इस अवस्था को प्राप्त न करोगे तुमको शीतल गति अर्थात् शान्ति नहीं मिलेगी।

रहना नहिं देश विराना है ।
यह संसार कागद की पुड़िया, बूंद पड़े घुल जाना है ।

इस शब्द से मन में विचार आया कि मर तो जाना ही है । अगर आज पाखण्ड करके दुनियां को अपने पीछे लगा के उनका धन लेकर चला जायगा तो यह कर्म तुझे भोगना पड़ेगा । इसलिये मैंने सचाई से काम किया है ताकि मेरी आत्मा पर धोखा देने का कोई बोझ न रहे । मैंने जो समझा वह कहा । कभी मैं यह समझता था कि सहसदल कँवल हमारा देश है और अब तो मैं यह समझता हूँ कि सतलोक भी हमारा देश नहीं है । अगर सतलोक हमारा देश होता तो स्वामी जी अलख अगम और अनामी का नाम न बताते । इस से मेरी खोज समाप्त हो गई । मैं तो बहुत ऊँचा चला गया । तुम लोग गृहस्थी हो । एक ख्याल ले लो और उसी में लगे रहो ।

एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाय ।

मैं यह नहीं कहता कि तुम मेरे चेले बनो या तुम राधास्वामी मत में आजाओ लेकिन एक ख्याल ले लो और एक जगह विश्वास रक्खो । यदि सच पूछो तो एक ख्याल लेकर उसमें ठहरना भी अपने वश की बात नहीं है । यह भी मालिक की मौज है ।

सब को शान्ति !

उपयोगी उपदेश

(महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज)

तू देख उलट कर मन में ।
क्यों फिरे भटकता बन में ॥

जंहां दर्द होता है वहाँ ही दवा भी होती है । जहां वासना होती है वहां वासना की पूर्ति का सामान भी होता है । यदि अपने असली घर की वापिसी का शौक है तो उलट कर अपने मन में देखो । तुम्हारा देश तुम्हारे अन्दर

और तुम्हारे घट में है। इन्द्रियों का देश पराया देश है। यह परदेश है। परदेश में कोई व्यक्ति घर बनाना पसन्द नहीं करता। यदि तुम जरा सोच-समझ से काम लो और अपनी वृतियों को अपने अन्दर उलट लो तो इन्द्रियों के फँसाव से क्षणमात्र में छुटकारा पा जाओ और यह खटका हमेशा को दूर हो जाये। एक अर्थ तो यह है।

दूसरा अर्थ यह है कि परमार्थ की चाह में भूले भटके लोग घर को छोड़ कर जँगल का रस्ता लेते हैं। उनको चाहिये कि विवेक और बुद्धि से काम लेकर अपने मन में सोचें। बन में मारे मारे फिरते हैं। क्या धरा है? यदि वृतियों को उलट कर मन में देखोगे तो वहाँ तुमको सत वस्तु का पता मिल जायगा।

(२) गुरु की क्षण क्षण हिदायत है कि तुम रात दिन नाम के सुमिरन में लगे रहो।

केवल नाम ही नामी से मिलने का साधन है। जब तक नामी नहीं मिलता तब तक साधन और आराधना की बड़ी आवश्यकता है।

इस ढंग से शौक बढ़ता रहेगा। मन में भावना आयेगी। कुरेद पैदा होगी और फिर असलियत की खोज में लग कर साक्षात्कार कर लोगे। इस तरह तुम नाम की बदौलत नामी से मिलकर एक हो रहोगे।

प्यास को अपने बढ़ा ऐ नेकबख्त।
ताकि बरसे अवरे रहमत सख्त सख्त ॥
जब नहीं ख्वाइश है सच्ची शौक क्या।
चाह जब दिल में नहीं फिर जौक क्या ॥
नाम से नामी की कर इसमें तलाश।
नाम व नामी एक हैं सुन फाश फाश ॥

(३) अपने अन्दर गुरु की मूर्ति को बसा लो। इस मूर्ति की ओर ध्यान लगाओ। यह क्रिया अपने घट के मन्दिर में करो।

यह मन्दिर तुम्हारे दिमाग में है। उसका द्वार दोनों भोंओं के वीच में है। द्वार में पहुंचकर गुरु का दर्शन करते हुए इसी दर्शन के क्रम में इस मन्दिर में अपने मन की रोक थाम करो।

आदमी जो आखों से देखता है, नक्श या चिन्ह चित्त पर पड़ जाते हैं। आदमी जो जागने के समय काम करता है, सोते समय उसी का स्वप्न देखता है।

आदमी जिसका नाम लेता है आंख बन्द कर लेने पर उसे आँख के अंदर पांता है।

यह सच्ची बातें हैं। जरा सोचने समझने के आधीन हैं। यदि बाहर गुरु का दर्शन तुमने किया तो अपने भ्रूमध्य के मन्दिर में उसी रूप को प्रगट कर लो। बाहर तो केवल स्थूल मूर्ति है। अन्दर सूक्ष्म मूर्ति प्रगट हो गई। जिस तरह सच्चे सत्संगी गुरु के दरबार में बैठे हुये आदर और सम्मान का ध्यान रखते हैं वैसे ही अन्तर में गुरु मूर्ति के सम्मान का ख्याल मुख्य है।

यह बड़ी बेअदबी है कि अन्दर अन्तरीय गुरु के दरबार में जाकर तुम अठखेलियां खेला करते हो। तुम्हें लज्जा नहीं आती ! संसारी हाकिम के सामने जाकर तुम किस नम्रता के साथ अपने मन को रोके हुये उसकी ओर ध्यान देते हो और यहां आसमानी हाकिम के दरबार में आकर तुम तरह तरह के विचारों से सम्बन्ध पैदा करने लग जाते हो।

जिस तरह कोई व्यक्ति राजा के दरबार में जाकर बेअदबी करने के कारण अपमानित होकर निकाला जाता है, उसी तरह गुरु भी राजा हैं और यह आसमानी राजा हैं। जाते हो तो इनके दरबार में और मन अन्दर ही अन्दर शरारत करता रहता है। कभी धन सम्पत्ति का ख्याल, कभी सन्तान की इच्छा, कभी मान सम्मान की लालसा। यह क्या है ? गुस्ताखी और बेअदबी है या नहीं ! ऐसी दशा में अगर वहां से धक्के देकर निकाल दिये जाते हो तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है। इसका पता इस एक बात से मिल जाता है कि ऐसे चंचल आदमी को अपने अन्दर गुरु का दर्शन प्राप्त नहीं होता।

घट को मन्दिर बनाना है या शराबखाना बनाना है। मन्दिर में जाकर अपने भावों को वश में रखना पड़ता है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

(४) जब अन्दर गुरु का दर्शन हो गया तो इस दर्शन में लय होने की चिन्ता करो। यही शून्य के दरबार में प्रवेश होना है। अब गुरु का ध्यान इस तरह पूरी तरह गुरु का ध्यान पक्का कर लिया गया तो गुरु और चेले की पहिचान बाकी नहीं रहती।

दोनों मिलकर एक तत्व हो गये। जहां यह अवस्था अभ्यासी को प्राप्त हुई, इसी का नाम शून्य का दरवाजा और ब्रह्मरेन्द्र है।

तू तू करता तू भया. मुझ में रही न हूँ।
वारी तेरे नाम की, जित देखूं तित तू ॥

पहिले यह दशा हो गई। बाद को—

मैं और तू दोनों गये, कहत न आवै बैन।
निज मन धँसा स्वरूप में, सतगुरु दीनी सैन ॥
गुरु मिले शीतल भया, मिटे मोह तन ताप।
मैं अपने को क्या कहूँ, जित देखूं तित आप ॥
क्या देखूं और क्या सुनूं, कहने की नहीं बात !
मोर तोर दोनों गये, मिटा सकल उत्पात ॥

(५) आकाश की कंदरा में सहज समाधि लगाकर चुपकी साधकर चुपके बैठ जाओ। मन को खेंचकर अन्तरीय शब्द में लगाओ ताकि सुरत और शब्द का मेल हो जाये और मन का कहीं पता तक न रहने पाये।

मित्रो ! याद रक्खो ! जब तक मन है और सुरत है और जब तक सुरत है और शब्द है और जब तक मन, सुरत और शब्द तीनों हैं तब तक यह तीनों दशायें नाशवान हैं। जाप और अजपा, सुमिरन, ध्यान और भजन कुल अभ्यास साधनमात्र है। इनमें से कोई ध्येय नहीं हैं। साधन और आदर्श में अन्तर होता है। इसकी पहिचान होनी चाहिए। सारा जीवन साधन में ही बिताना ध्येय नहीं है किन्तु उसकी गरज असल ध्येय तक पहुँचना है क्योंकि कहा गया है :—

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय।
सुरत समानी शब्द में, ताहि काल नहीं खाय ॥

॥ मनुष्य बनो ॥

जब सुरत और शब्द दोनों मिलकर एक होगये। विवेक समाप्त होगया।

उलट समाना आप में, प्रगटी जोति अनन्त।
सेवक स्वामी एक संग खेले सदा बसन्त॥
बस बसकर बस गई; मिला शब्द का अन्त।
सुरत शब्द मेला भवा, इसको कहिये बसन्त॥
बस बसकर बस बस गये, फूटी अद्भुत पास।
आस पास कोई नहीं, सेवक स्वामी पास॥
बसना हो ऐसा बसो, और है बास कुबास।
जब नहीं एसा बसन्त ऋतु, अन्त में होगे उदास॥

भाइयो! सुरत को सुन्न में जमाओ। जम-जमकर इस तरह गये कि स्वयं शून्य हो जाये। तीन गुण—सत, रज, तम अर्थात् ज्ञान, द्वन्द और आस के भ्रम में क्यों भरमते हो! गोरख धन्धे में फँसा, बुरी तरह मारा गया।

तीनों गुण सहगे गये, सतगुरु किया सहाय।
सुन्न मण्डल में घर किया, काल रहा मुरझाय॥
यह तो गति है अटपटी, झटपट लके न कोय।
जब घर की दुविधा मिटे, चटपट दर्शन होय॥
सत तम दोनों द्वन्द हैं, रज है द्वन्द की खान।
इस रहस्य को वह लखे, जो हो चतुर सुजान॥

शून्य में क्या है? जिसका नाम स्वयं शून्य है उसमें क्या होगा? भाई! होने को तो इसी में सब कुछ है उसी शून्य में तुम्हारा रूप है। वहाँ तुम हो। इसलिए अपने स्वरूप का पक्का ध्यान करते हुए तुम इसमें लीन हो गये तो फिर आदि, मध्य और अन्त तीनों दशायें लोप हो जायेंगी।

सृष्टि, स्थिति प्रलय तीनों की समाप्ति हो गई। यह तुम्हारा देश है। यह तुम्हारा निजस्वरूप है।

सुन्न शिखर में घर किया, तजी खलक की आस।
अब आसा किसकी करूँ, अपना पाया पास॥

॥ मनुष्य बनो ॥

जो तू गुरु का सेवका, चल सतगुरु की राह ।
जो नहीं चलता राह पर, जलेगा जय की कढ़ाह ॥

दोष और बुराइयों की खेंदक में क्यों गिरते हो ! जो गिरा वह पड़ा, जो पड़ा वह गढ़ा, जो गढ़ा वह सड़ा ।

अगर लोगों के ऐब देखोगे, ऐब देखने लगोगे । जो किसी को मुँह बनाकर चिढ़ाता है, अन्त में स्वभाव से उसका मुँह भी वैसा ही हो जाता है क्योंकि वह चिढ़ाने का साधन करता है । जो जा बेजां, उठते बैठते लोगों की शिकायत, निन्दा, बुराई और दोष बखानते रहते हैं वह अत्यन्त मलीन लोग हैं । वास्तव में कुत्ते और सूअरों से भी गये बीते हैं । कुत्ते और सूअर तो केवल दूसरों का पाखाना खाते हैं मगर निंदक, दोषदर्शी उन लोगों की सड़ी गली, घृणित और गंदी चीजों को चट करते रहते हैं जिनको कुत्ते और सूअर भी नहीं खाते ।

निन्दा जन करते फिरें, सदा हँसत हँसत ।
अपनी याद न आवही, जाका आदि न अन्त ॥

इसलिए किसी के अवगुण की ओर दृष्टि न करो, अन्यथा खेरियत नहीं है । यदि सत्संग में आते हो तो अपनी मलीनताओं को धोते चलो । ऐसा न करो कि यहाँ भी सौसन गंदगी दूसरों के संडास और पेशावखाने से निकाल निकालकर अपने तन और मन में भरते चलो । यह बात अच्छी नहीं ।

देखो भाइयो ! दोष दर्शन, नुक्ताचीनी और दूसरों की बुराई करने में तुमने अपनी आयु का बड़ा हिस्सा नष्टकर दिया । इससे तुमको स्वयं धोखा हुआ । तुम अपने आपको धोखा देते रहे । सोचो तो सही ! दानी वह काम करता है जो इसके काम का है । निरर्थक काम करने से क्या लाभ ! उलटे हानि ही हो रही है । गुरु की बाणी, गुरु का शब्द और गुरु का बचन सुनकर अपने स्वरूप के जानने की कोशिश में लगो, ताकि तुम अपने आपका सच्चा पता पा लो और तुम्हारा धोखा मिट जाय । इस सत्संग के अवसर को गनीमत समझो । फिर यह हाथ नहीं आयेगा ।

सुतदारा अस लक्ष्मी, पापी के भी होय ।
संत समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय ॥

(९) यदि संतों के दरबार में आते हो तो सत्संग का आनन्द लो। कुछ इसका रस तो मिले क्योंकि यह बड़ी रसीली वस्तु है। हमेशा सत्संग का रस लेते चलो और रसीले बन जाओ। इसमें जो रस या स्वाद है वह धन और मान में नहीं है। जो धन और मान में पचते और खपते रहते हैं उनको आनन्द कभी हाथ न आयेगा, जो सत्संग का गुण है।

(१०) सबसे पहिली शर्त यह है कि सम और दम करो। मन और इन्द्रियों को काबू में लाओ। मन और इन्द्रियाँ प्रबल न होने पायें। इस यतन में लग जाओ। फिर स्वयं रास्ता निकल आयेगा।

(११) जिस समय कुछ दिनों के अभ्यास करने से मन और इन्द्रियों की रोकथाम होने लगे तो फिर अपने कानों से आकाशीय पुराने, गगन शब्द और गुरु बाणी का नाद सुनने का यतन करो। पहिले वह और उसके बाद यह।

(१२) फिर जीवन बनने में देर नहीं लगेगी। अनहद बाणी की धुनि सुन-सुनकर तुम आपे में मगन होने लगोगे। यह दोनों मरहले तै करलो। फिर सतगुरु, सत्पुरुष सतधाम और पूर्णधनी राधास्वामी दयाल के चरणों में अपने मस्तक को झुकाओ और तुम्हारा काम पलक्षण में बना बनाया तैयार है।

—३० जनवरी १९३०

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर १९—११—७२)

धोके में सब जग जात पचा।
अपनी अपनी बुद्धि दौड़ावें, सारभेद नहिं हाथ लगा॥

अब बुढ़ापा होगया। अपना जीवन याद आता है। सोचता हूँ कि

फकीर ! तुमने जीवन में यह क्या मकड़ी का जाला तान लिया। लोग तुम्हारे पास आते हैं और तुमसे कुछ आशा रखते हैं। यह अपने अन्तःकरण की आवाज आप लोगों को सुना रहा हूँ। जहाँ तक मेरा अनुभव है यह मेरे कर्म या मेरा भाग्य या मौज मालिक है। मैंने अपनी नीयत से यह मण्डल या दायरा नहीं बनाया। मैंने यह काम क्यों किया ? छोटी आयु से ही दुनियाँ को देखता था। कोई मरता है कोई पैदा होता है। कोई दुखी है कोई सुखी है। कोई अमीर है कोई गरीब है। तो ख्याल आया था कि इस दुनियां को बनाने वाला कोई है। अपने कर्म या संस्कारों के अनुसार जिस कुल में पैदा हुआ और जो विचार वहाँ मिले उनको भी मानता था। कभी मन्दिर में जाता, कभी देवी को मत्था टेकता, कभी राम की माला फेरता और कभी विष्णु सहस्रार नाम का जाप करता था। चूंकि रामायण से यह संस्कार मिला हुआ था कि वह मालिक मानव रूप में आया करता है इसलिए उस राम को मानव रूप में मिलने की भावना पैदा हुई। २४ घंटे लगातार रोने के बाद एक दिन यह भावना मुझे दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे राधास्वामी मत या संत मत की शिक्षा दी, जिसको मैं जानता नहीं था। उनकी बाणियाँ पढ़ीं। उन बाणियों में सबका खंडन था कि राम और कृष्ण भी काल के अवतार थे। पाराशर भी नहीं पहुंचे। वशिष्ठ भी भूल गये। मुहम्मद साहब भी रास्ते में ही रह गये। बुद्ध भी नहीं पहुँचे और न ईसा पहुँचे। चूंकि दातादयाल जी पर मेरा पूर्ण विश्वास था उनको राम मानकर उनके चरणों में गया था और उन्होंने मुझे यह बाणी दी थी इसलिए इसको भी झूंठ नहीं कह सकता था। इसलिए मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर सच्चा होकर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा।

इस शब्द में हुजुर महाराज ने कहा है कि—'सार भेद नहिं हाथ लगा।' मैंने अपने जीवन में इस सारभेद को जानने की पूरी कोशिश की। हो सकता है दातादयाल ने मेरे कर्म काटने के लिए ही मुझे यह काम दिया हो। मैंने जो कुछ कहा वह अपना कर्म भोगा। अपनी ड्यूटी को पूरा करने के लिये

यह मानवता मन्दिर बनाया क्योंकि सेन्टर के बिना काम नहीं चलता लेकिन अपना कोई निजी स्वार्थ नहीं रक्खा।

राधास्वामी मत वाले कहते हैं कि जो कुछ है वह गुरु है। जिस विभूति (राय सालिगराम साहब) ने यह मत चलाया है उन्होंने अपने गुरु स्वामी जी महाराज की बहुत सेवा की है। उनका थूक खाये, चक्की पीसी, टट्टी साफ, की और तेल मिल से उनके लिए सिर पर पानी का घड़ा रखकर लाते। यदि रास्ते में लोग कहते कि हमको पानी पिलादो तो उनको मना नहीं करते और पानी मिला देते और फिर दुबारा स्वामी जी को पानी लाते। इतनी सेवा उन्होंने की है। उनके पग चिन्हों पर चलकर मैंने भी दातादयाल जी की सेवा अपने असली घर को पाने के लिए की यद्यपि मैं उनके बराबर तो सेवा नहीं कर सका। फिर भी जितनी की वह प्रेम से की।

आप लोग आये हैं। आज मैं बहुत खुश हूँ। लगभग १५ दिन हुए संयोग से एक शब्द निकला और भंडोरीदेवी ने पढ़कर मुझे सुनाया। अब तुम देखो जिस पवित्र विभूति ने अपने गुरु की इतनी सेवा की है उनका अपने गुरु से कितना प्रेम होगा। उनके प्रेम की यह दशा थी कि वह अपना कुल वेतन स्वामी जी महाराज के आगे लाकर रख देते थे और वह मुट्ठी उठाकर उनके बाल बच्चों को खर्च के लिए दे देते और शेष सब गरीबों को बाँट दिया करते थे। एक बार हुजूर महाराज को कुछ रुपया मिलने वाला था तो वह स्वामी जी महाराज को साथ ले गये और रुपया ले लिया। जब वह रुपया लेकर वापिस आ रहे थे तो सड़क पर लोगों में बाँटते हुए आ रहे थे। माँगने वाले उनका पीछा नहीं छोड़ते थे। लगभग एक फर्लांग रास्ता अभी बाकी था तो रुपया निबट गया। हुजूर महाराज दौड़े गये और अपने घर से एक थैली रुपयों की लाए और स्वामी जी महाराज के सामने बाँटने के लिए देदी। आज मुझे खुशी है कि मैंने जीवन में शिष्य तथा गुरु की हैसियत में जो कुछ समझा है हुजूर महाराज के इस कामना से पुष्टि करती है।

गुरु घोर चरन रचना की जान ॥

यदि तुम कहो कि उन्होंने स्वामी जी को गुरु माना हुआ था, यह ठीक

है । वह बहुत विद्वान थे । पोस्टमास्टर जनरल थे लेकिन वह तो कहते है कि 'गुरु घोर चरन, रचना की जान' हैं । अब आप सोचो कि क्या स्वामी जी महाराज के बाहरी चरण दुनियाँ को बताते हैं ? नहीं । इस समय गुरु मत का राज है । जगह-जगह गुरु हैं और डेरे बने हुए हैं । गुरु के असली रूप को कोई समझता नहीं । सब अपने-अपने डेरों के लिए काम करते हैं और दुनियां अज्ञान के कारण लुटी जा रही है । कुदरत से मुझे इस गुरु इज्म के सुधार के लिए भेजा है । मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ वह हुजूर महाराज की बाणी के आधार पर कह रहा हूँ ।

गुरु घोर चरण रचना की जान ।
आदि धार चेतन जो निकसी, उसने रची सब रचना आन ॥

अब तुम सोचो कि क्या राधास्वामी मत में कहीं धोका है ? गुरु मत में बहुत सचाई और स्पष्ट वर्णन है । वह कहते हैं कि आदि धार जो गुरु के चरण से निकली उसने इस सारे संसार को रचा । वह हैं गुरु के चरण और तुम मेरे चरणों को पूजते हो, या अपने-अपने गुरुओं के पाँव चाटते रहते हो यद्यपि यह गुरु के जीवन में यह भावना धन्य है । क्यों ? बच्चे का दिमाग काम नहीं करता । बच्चे की आत्मा की शक्ति शरीर में काम करती है । बच्चा अपने प्रेम को अपने शरीर की गति से करता है क्योंकि बच्चे में मुंह से कहने की शक्ति नही होती । इसलिए जो जीव तमोगुणी हैं या शरीर को सब कुछ समझते हैं या जिनको ऊँची बात समझने की बुद्धि नहीं है वह शारीरिक सेवा करने के लिए विवश हैं । मैं इसका खंडन नहीं करता । जो जीव मन के मण्डल में हैं वह अपने मन से या किसी शब्द के द्वारा अपनी खुशी को प्रगट करते हैं और जो इससे भी ऊँचे हैं वह अपने अन्तर अपनी आत्मा से या शब्द या प्रकाश से प्रेम करने के लिए विवश हैं । अब मैंने किसी का खण्डन भी नहीं किया और तुम लोगों को सचाई भी बतादी । यदि कोई गुरु अपने चेलों को सचाई नहीं बताता और सारी जिन्दगी उनसे सेवा ही करवाता रहता है तो वह अपराधी है । जिस तरह माँ बाप यह चाहते हैं कि हमारे बच्चे पढ़ें लिखें, निपुण हो जाँय और बड़े होकर योग्य

बनें, ऐसे ही गुरु भी यह चाहता है कि मेरा शिष्य चतुर और योग्य बनें। चूंकि आजकल के गुरु लोग दुनियां को गुरुमत की असलियत और सच्ची शिक्षा देते नहीं, इसलिए लोग अज्ञान के कारण लुटे जा रहे हैं।

आजकल आप समाचार पत्रों में पढ़ते होंगे कि एक महात्मा अमरीका से साढ़े छः लाख रुपया इकट्ठा करके ले आया जोकि कानून के विरुद्ध है। फिर उस रुपये को कस्टम वालों से छिपा करके लाना चाहा लेकिन पकड़ा गया। यह आजकल के गुरुओं की दशा है। अब आप सोचो कि ऐसे गुरु की रेडीयेशन से उसके चेले यदि ४२० नहीं बनेंगे तो और क्या नहीं बनेंगे? मैं इस संसार में संत सतगुरु वक्त का अवतार लेकर आया हूँ। कुदरत ने मेरे दिमाग में सचाई वर्णन करने की भावना भरदी है। मैं अपने आपसे मकड़ी का जाला नहीं ताना।

परसों दहली से एक सज्जन जो दातादयाल जी के शिष्य हैं, अभी अपनी स्त्री और अपने लड़के को भी साथ लाये। उसने गलतियाँ भी की हैं इसलिए वह शायद मेरे सामने न भी आता मगर उसका लड़का उसको मेरे पास लाया। वह आदमी कहता है कि लगभग चार वर्ष पहिले जब वह लड़का जापान जाने लगा तो मैंने उसको आपका एक फोटो दिया। लड़के का विश्वास बैठ गया। वह लड़का बताता है कि जब कभी मैं किसी काम के लिए जाता हूँ तो आपके फोटो को मस्तक से लगाकर नमस्कार करता हूँ। और मेरे काम हो जाते हैं। वहाँ एक करोड़पति जापानी की लड़की से उसका विवाह हुआ है। अब उसको व्यापारी बना दिया है और वह अपने कारबार के सिलसिले में भारत आया हुआ है।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या तुम उस लड़के को जानते थे? नहीं। अब जब वह मेरे पास आया है, तब मैंने उसको देखा है। क्या तुमको पता है कि इसके बाप ने मेरा एक फोटो इस लड़के को दिया? नहीं। यह सब क्या खेल है? मनुष्य के दिमाग पर उसके विश्वास के अनुसार जिस प्रकार के संस्कार पड़ जाते हैं वह अपना काम करते हैं। मनुष्य का विश्वास काम करता है। लोग मेरे पास आते हैं और मुझ पर विश्वास करते हैं कि

बाबा के प्रशाद से काम हो जाता है। वह प्रशाद ले जाते हैं और उनके काम हो जाते हैं लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता। तो क्या मैं करता हूँ? वह उनका विश्वास करता है और उसका यश मुझको मिलता है लेकिन मैं उसका अनुचित लाभ नहीं उठाता। लोग यह समझते हैं कि बाबा फकीर ने हमारा काम किया है। इसी अज्ञान के कारण आज भारतवर्ष में अनेक डेरे और गद्दियाँ बन गईं और गुरु बन गये। निबल अबल और अज्ञानी जीवों की जायदादें लूटली गईं।

मेरे पास सत्संग में एक आदमी आया करता है। मैं उसकी बात को सुनकर चकित हो गया। मैंने उसको नाम नहीं दिया। घरेलू कष्टों के कारण दुखी होकर साधु बन गया था। मेरे सत्संग से बात उसकी समझ में आगई। और उसका शब्द और प्रकाश खुल गया। अब वह मेरा नाम लेकर प्रशाद दे देता है और लोगों के काम हो जाते हैं। यह क्या खेल है। यह सब विश्वास का खेल है।

धोखे में सब जग जात बहा।
अपनी अपनी बुधि दौड़ावें. सार भेद नहि हाथ लगा ॥

मैं गुरुमत का सार भेद संसार को समझाता हूँ और गुरुमत की असली कुञ्जी बताता हूँ कि सत्गुरु एक शक्ति है और उसकी एक किरण सारी रचना रचती है।

गुरु प्यारे चरण रचना की जान।

यह संत मत की बाणी है और सनातन धर्म कहता है कि गुरु अखण्ड-मण्डलाकारम् है। तो फिर क्या अन्तर है सन्तमत में और सनातन धर्म में। न किसी ने समझाया और न किसी ने समझा। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा मगर कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा है वही ठीक है। लेकिन मैंने गुरु और शिष्य की हैसियत में जो कुछ समझा है उस का समर्थन स्वामी जी की बाणी करती है। वह कहते हैं कि गुरु प्यारे चरण रचना की जान है। गुरु प्यारे के चरण हैं पारब्रह्म या प्रकाश (नूर) का केन्द्र जहां से यह किरण निकल कर इस ससार को बनाती है। वह हैं गुरु के

चरण । इस स्पष्ट वर्णन से मुझे कोई पैसा नहीं देता । बहुत कम आदमी हैं जो मेरी सेवा करते हैं । यदि पर्दा रखता तो मेरे बहुत बड़े बड़े डेरे होते लेकिन मैं गलत ढँग से किसी से कुछ लेना नहीं चाहता और अपनी आत्मा को निर्मल रख कर यहाँ से जाना चाहता हूँ । पिछले कर्म तो मैं अब भोग रहा हूँ और यदि अब कोई बुरा कर्म करूँगा तो इसके फल से बच नहीं सकता ।

कर्म प्रधान विश्व कर राखा ।
जो जस कीन्ह सु तस फल चाखा ॥

यदि राधास्वामी दयाल की यह बाणी सच है और शास्त्रों के अनुसार कर्म की फिलोस्फी ठीक है तो जिन साधुओं, महात्माओं और गुरुओं ने पर्दा रक्खा और जीवों को अज्ञान में रख कर दौलत इकट्ठी करके अपनी जायदाद बनाई है उनकी क्या दशा होगी । मैं जानता हूँ कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ आप उसके अधिकारी नहीं हैं । आप इस जगह ठहर नहीं सकते । आपको तो वह गुरु चाहिये जो आपको सब्ज बाग दिखाये और जिसके पीछे हजारों चेले लगे हुये हों । इसीलिये राधास्वामी मत में कहा गया है कि पूर्ण गुरु को ढूंढो ।

लालों की नहिं बोरियां, हंसों की नहिं पाँत ।
सिंहों के लँहड़े नहीं, सन्त न चलें जमात ॥

असली सत्गुरु कौन है ? असली गुरु है शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल और उनके चरण हैं प्रकाश ।

गुरु प्यारे चरण रचना की जान ।
आदि धार चेतन जो निकसी, उसने रची सब रचना आन ।
वही धार गुरु चरण पिछानो, वही पिंड ब्रह्मांड समान ॥

वह धार जो शब्द और प्रकाश से तुम्हारे अन्तर आई हुई है वह बाहर में भी है और अन्तर में भी है । मनुष्य कुदरत का नमूना है और इसके मस्तिष्क में यह धार मौजूद है । यह है गुरु के चरण । अज्ञान के कारण लोग गुरुओं के पांव पूजते हैं । काम तो विश्वास कराता है । आप किसी दस

नम्बर के बदमाश को गुरु मशहूर कर दो। जिनको पता नहीं है कि यह
बदमाश है, जब वह उस पर विश्वास करेंगे तो उनके काम होने लग जायेंगे।
डा० शर्मा के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता था क्योंकि वह मुझ पर विश्वास
करता था और मुझ से प्रेम करता था। उसने भावुकता में आकर अमरीका
में कहा कि दयाल फकीर मेरे सामने हैं और मेरा पथ प्रदर्शन कर रहे हैं।

उन लोगों ने जब यह बात सुनी और मेरी फोटो को देखा तो वह मुझ
पर विश्वास करने लग गये और बहुत से आदमियों के अन्दर मेरा रूप प्रगट
होने लग गया यद्यपि मैं उनको जानता भी नहीं था। मुझे उनकी चिट्ठियाँ
आने लग गईं। मैंने सबको यही लिखा कि मुझे कोई पता नहीं। मैं तुम्हारे
अन्तर नहीं जाता, यह सब तुम्हारे प्रेम और विश्वास का फल है। क्या कोई
गुरु ऐसी बात कहता है? जीवों को अज्ञान में रख कर भेंट चढ़ावे के लिये
अपने पीछे लगा रखते हैं। मेरे लिये मेरे गुरु महाराज की आज्ञा है—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल, अबल, अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

गुरु का देश वह है जो हुज़ूर महाराज बता रहे हैं। जो लोग मुझे गुरु
मानते हैं मैं उनका आदर करता हूँ लेकिन बात सच्ची बिना लाग लपेट के
कह देता हूं। कोई मेरे पास आये या न आये, इस बात की मुझे परवाह
नहीं है। संसार को कहना चाहता हूँ कि अपने इस जीवन में सच्चे सतगुरु
के चरण अर्थात् प्रकाश को पकड़ो या शब्द को पकड़ो ताकि यदि अन्त समय
पर तुमको शब्द या प्रकाश आ जाये तो तुमको इस दुनियाँ से बचने का अव-
सर मिलेगा। सनातन धर्म भी यही कहता है। हिन्दुओं में जब आदमी मर
जाता है तो दस दिन तक ज्योति जलाते हैं ताकि मरने वाले के सामने
सावित्री का ख्याल रहे और उसके सामने ज्योति स्वरूप आ जाये इसलिये
सन्त मत और सनातन धर्म में कोई अन्तर नहीं है। सत्पुरुष हुज़ूर महाराज
का एक एक शब्द अमूल्य है।

॥ मनुष्य बनो ॥

मैं तुम लोगों को वह सत्संग कराता हूँ जो किसी महापुरुष ने स्पष्ट रूप से आज तक नहीं कराया। यदि कराया तो ऐसे ढँग से कराया कि किसी की समझ में नहीं आया। हुजूर बाबा सावन सिंह कहा करते थे कि सौ वर्ष की पूजा से ढाई घड़ी का सत्संग अच्छा है। मैं तुम लोगों को ढाई घड़ी का सत्संग करा रहा हूँ।

यह सरसोंहेड़ी से मेरे लिये दवाई लेकर आये हैं। इनका सारा गांव मुझे मानता है और मेरी सेवा करता है। यदि मैं इनको सच्ची बात नहीं बताता हूँ तो इसके दण्ड से कैसे बच सकता हूँ। कई बार सोचता हूँ कि फकीरचन्द ! बाणी क्या कहती है और संसार को क्या बताया गया है। क्या यह अपराध नहीं है ? इन महात्माओं को कोई बात न मिली तो लोगों को यह ख्याल दे दिया कि नाम ले लो। तुमको गुरु तुम्हारे अन्त समय आकर ले जायगा। जो भी चाहे कर्म करो मगर नाम ले लो। लोगों ने अभ्यास करना ही बन्द कर दिया कि गुरु महाराज ले तो जायेंगे ही अब अभ्यास की क्या आवश्यकता है। कई आदमियों ने यह सोच लिया कि अब कोई भी कर्म किये जाओ, गुरु महाराज ले तो जायेंगे ही।

मैं यह नहीं कहता कि तुम मुझे मानो। मैं तो कहता हूँ कि तुम गुरु या बाणी को या सन्तों की बाणी को मानो। कबीर साहब ने अपने एक शब्द में भविष्य बाणी की है कि कलियुग में बहुत से गुरु पाखन्डी होंगे। मेरा अनुभव चूंकि हुजूर महाराज की बाणी से मिलता है इसलिये मुझे साहस है कि मेरी खोज बिल्कुल ठीक है। यह दूसरी बात है कि यदि अन्त समय में किसी ख्याल में चला जाऊँ तो मेरा उद्धार न हो, इसका मुझे पता नहीं। मुझे कोई यह नहीं कह सकता कि मैं सनातन धर्म या सन्त मत से विमुख हूँ। गुरु अखण्ड मण्डलाकारम् है। उसकी धार इस संसार को बनाती है। अपने समाज या दायरे को बढ़ाने के लिये यदि कोई बदनाम करे तो दूसरी बात है। मैं भविष्य बाणी किये जाता हूँ कि भारतवर्ष में अभी सुख नहीं होगा।

यह गुरु और महात्मा लोग या भिन्न-भिन्न पार्टियों वाले जो कर्म कर रहे हैं इसका फल कहाँ जायेगा ? यह आपत्तियाँ हमारे कर्म का फल ही तो हैं। कबीर साहब का शब्द है :—

हंसा हो चित चेत सवेरा, इन परपंच कियो बहुतेरा।
पाखंड रूप रचे इन त्रिगुन, पाखंड मूल संसारा ॥
घर के खसम वधिक भये राजा, परजा काधों करे विचारा ॥

अब देखो कि लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रगट होता है लेकिन मैं नहीं होता। यदि इनसे यह बात सुनकर मैं चुप हो जाता हूँ या चेलों से मैं अपना प्रोपेगंडा करवाता हूँ कि बाबा यह करता है बाबा वह करता है तो क्या वह मेरा पाखण्ड नहीं हैं ? इसलिये पाखंड रहित हूँ, मायातीत हूँ और गुणातीत हूँ। यद्यपि अभी तक माया में रहता हूँ मगर में माया के रूप को जानता हूँ, इसलिए मैं स्वयं न इसमें फंसता हूं और न दुनियां को फँसाने की कोशिश करता हूँ।

भगति न जाने भगत कहावे, तज अमृत विष कर लिया सारा।
आगे बड़े ऐसे ही बूढ़े, तिहूँ न माना कहा हमारा ॥
कहा हमारा गांठ दृढ़ बांधो, निसवासर रहियो होशियारा ।
कलि के गुरु बड़े परपंची, डार ठगोरी सब जग मारा ॥
वेद कतेब दोऊ फंद पसारे, तिहि फंदे फंस आप बेचारा ।
कहैं कबीर सो हंस न विसरे, जिहि में मिला छुड़ावन हारा ॥

देखो कबीर साहब ने चार पाँचसौ वर्ष पहिले भविष्य बाणी की है कि कलियुग के गुरु प्रपंची होंगे। मैं अमरीका गया। वहाँ बहुत से आदमियों के अन्तर मेरा रूप प्रगट होता है। वह हजारों डालर लेकर मेरे पास आये। मैंने इन्कार कर दिया और उनको बता दिया कि यह जो मेरा रूप तुम लोगों के अन्तर प्रगट होता है यह तुम्हारे मस्तिष्क पर जो Impression (संस्कार) और suggestion (संकेत) पड़े हुए हैं यह उनका परिणाम है। यह तुम्हारे प्रेम और विश्वास का फल है। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता।

॥ मनुष्य बनो ॥

तुम लोग यदि आते हो तो मेरी सचाई को सुनो। यदि प्रपंच करता हूँ तो मैं अपराधी हूँ। मुझे सबसे पहिले अपना आपा प्यारा है। पहिले तुम प्यारे नहीं हो। याज्ञवल्क ऋषि ने कहा था कि पुत्र पुत्र के लिए प्यारा नहीं है किन्तु आत्मा के लिए प्यारा है। पिता पिता के लिए प्यारा नहीं है किन्तु आत्मा के लिए प्यारा है। मेरे स्पष्ट वर्णन से यही तो है कि मुझे पैसा नहीं मिलता। न मिले, मुझे इसकी परवाह नहीं है लेकिन मैं लोगों की आँखों में मिट्टी डालकर पैसा इकट्ठा करके अपने कर्म को बिगाड़ना नहीं चाहता। ट्रस्ट वालों को कहे जाता हूँ कि जितना रुपया तुम खर्च करना चाहते हो वह दातादयाल की शिक्षा को और मेरे विचारों के प्रचार में खर्च करो ताकि दुनियां इस लूट से बच जाये। आज जितना रुपया इन मन्दिर डेरों, गुरुद्वारों तथा दूसरे धार्मिक स्थानों में जमा है यदि यह कुल रुपया गवर्नमेंट के पास आ जाय तो गवर्वमेंट को टैक्स लगाने की आवश्यकता न पड़े।

यह रुपया कैसे इकट्ठा किया गया? गुरु बनने के बाद यह बात मेरी समझ में आई। बात क्या थी और क्या बताई गई। बस यही पाखंड का जाल है। यह गुरु लोग स्वयं भी बट गये और मानव वंश को भी बांट दिया लेकिन राधास्वामी मत के जो संस्थापक हैं वह क्या कहते हैं :—

गुरु प्यारे चरण रचना की जान।
आदि धार चेतन जो निकसी, उसने रची सब रचना आन ॥
वही धार गुरु चरण पिछानो, वही पिंड ब्रह्माण्ड समान ॥
उसी धार का सकल पसारा, वही धुन और नाम कहान ॥
जुगती ले गुरु से सुरत अपनी, उसी धार को पकड़ चढ़ान ॥

बाहर के गुरु ने तुमको युक्ति बतानी है कि तुम अपने अन्तर में शब्द और प्रकाश को कैसे पकड़ो। उसकी बस यही ड्यूटी है। अमल करना आपका काम है।

राधास्वामी महर करें जब अपनी, निज स्वरूप घर में दरसावें ॥

मैं कई बार सोचता हूँ कि फकीरचन्द ! तुमने क्या यह गलती की है जो अपने आपको संत सतगुरु वक्त कहकर प्रगट किया है। मैंने प्रगट नहीं

किया किन्तु मेरे गुरु दातादयाल ने प्रगट किया है। अब मैं सोचता हूँ कि फकीरचन्द ! तुम कहते हो कि मैं राधास्वामी दयाल का अवतार हूँ। यदि तुम राधास्वामी दयाल के अवतार हो तो अब संसार पर दया करना ताकि यह संसार वाले अपने निजस्वरूप को पकड़लें। देखो मित्रो ! जिस अनुभव और जिस ज्ञान से मैंने निज रूप को पकड़ा है, यद्यपि मैं वहां पर अभी तक ठहर नहीं सकता, मैं वह उपाय या युक्ति आप लोगों को बता सकता हूँ कि मैं कैसे वहाँ पहुँचा। जब से मुझे आप लोगों ने बताया कि मेरा रूप आप लोगों की सहायता करता है लेकिन मैं नहीं होता तो मैं यह सोचने के लिए विवश हो गया कि मेरे अन्तर में भी जो रूप रंग बनते हैं यह सब संस्कार हैं। इनको छोड़ने के बाद शब्द और प्रकाश शेष रह जाता है। शब्द और प्रकाश में जाने के बाद मैं उस वस्तु की खोज करता रहता हूँ जो शब्द को सुनती और प्रकाश को देखती है। यह वस्तु है मेरा निजस्वरूप। दाता-दयाल जी ने मुझे केवल इशारा किया लेकिन मुझे समझ नहीं आती थी और मेरा द्वैत भाव भी बड़ा प्रबल था। मेरे द्वैत भाव को तोड़ने के लिये उन्होंने मुझे गुरुयायी दी थी और कहा था कि तुमको सतगुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। मैं अब शब्द और प्रकाश में ठहरता हुआ अपने निजस्वरूप में जाने की कोशिश करता रहता हूँ। मगर अभी तक पूर्णतया मिलाप नहीं हुआ। असली मालिक वह है जो मेरे अन्तर शब्द में रहता हुआ शब्द को सुनता है और प्रकाश में रहता हुआ प्रकाश को देखता है। वह मेरा निजस्वरूप है। कभी-कभी तीन चार महिने के बाद जब कभी वह अवस्था आ जाती है तो वहाँ क्या है ? न मैं हूँ, न राम, न रहीम, न ईश्वर न खुदा। वह एक तत्व है। आदि में खामोशी और अन्त में खामोशी (Silence in the beginning and silence in the end.) मैं यह तो नहीं इससे मैं इस परिणाम पर आया कि जीवन कैसे काटूँ। कहता कि मैं खुदा बन गया हूँ। मैं तो उसका एक अंश हूँ। वही अंश इस शरीर में आया। संसार बन गया। किसी का कोई काम और किसी का कोई। यहां न कोई बुरा है न कोई अच्छा है। यह सब उसकी मौज है।

इस अवस्था में रहने का नाम जीवन मुक्त अवस्था या विदेह गति है। उस मालिक का किसी ने भी भेद नहीं पाया।

मेरा जीवन सचाई से बीता है। तुम लोग आ जाते हो। तुम्हारे कारण मुझे अपना कर्म काटने का अवसर मिल जाता है। मेरे पास सिवाय शुभ भावना के और कुछ नहीं है। शुभ भावना मैं सबको देता रहता हूँ।

शास्त्र कहते हैं कि आदि में सत को असत ने ढक रक्खा था। शब्द और प्रकाश की अभिव्यक्ति (जहूर) का नाम सत है। गति होने से प्रकाश और आवाज पैदा होती है। यही कबीर साहब की बाणी कहती है। यही स्वामी जी महाराज कहते हैं। केवल शब्दों का अन्तर है। मैं मजहबों की एकता के लिये आया हूं। अज्ञान और भ्रम के कारण हमारी मानव जाति भिन्न-भिन्न धर्म और पंथों में बँट गई। चूंकि मेरे जिम्मे ड्यूटी थी इसलिए उस ड्यूटी को पूरा करने के लिये मैंने इस भेद को खोला है। जिसके भाग्य में है वह सुने और इस पर क्रियान्वित हो।

निज घर पहुँचना महा कठिन काम है। इसलिये आप लोगों के लिये "शिवसंकल्पमस्तु" अर्थात् वेद मार्ग है। अच्छे विचार रक्खो। तुम्हारे संकल्प का ही तुमको फल मिलेगा। घरों में प्रेम प्रीति से रहो। घृणा और शत्रुता को छोड़ो। चौबीस घंटे तो मनुष्य अपने अन्तर योग साधन नहीं कर सकता, इसलिये काम में मन को लगाओ। खूब काम करो और काम में मग्न रहो। अपनी आमदनी से अधिक खर्च मत करो। जो आदमी लोक लाज में आकर विवाहों में अधिक खर्च करते हैं वह दुखी होते हैं। मैं निर्धन था और मेरी स्त्री बीमार थी। मैं ही जानता हूँ कि मैंने कैसे गुजर की। जो डाक्टर आता था तो कभी फीस नहीं लेता था और कभी २५ फीसदी छोड़ देता था। सेठ गिरधरसिंह ने मेरी बड़ी सहायता की कि मैंने स्त्री का इलाज कराया। संसार में सबसे बुरी बला ऋण है।

कर्जा भला न बाप का, बेटी भली न एक।
चलना भला तो कोस का, सतगुरु राखे टेक॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

गृहस्थ के कामों में लोक लाज में आकर कर्जा मत लो। कारोबार के लिये लेना दूसरी बात है। मेरे विवाह पर मेरे पिता ने कर्जा लिया था। मैंने अपनी नौकरी में उस कर्ज का भुगतान किया था। मैं और मेरा भाई अपने ऋणदाता की खुशामद करते थे कि किस्त करलो ताकि इस पर और अधिक सूद न लगे लेकिन वह मानता नहीं था।

यदि तुम अध्यात्म नहीं सीख सकते तो कम से कम दुनियां में सुखी रहने का ढंग ही सीख लो। परसों एक आदमी अपने लड़के को लेकर मेरे पास आया। उसको दौरा पड़ता था। मैंने उस लड़के से पूछा कि सच बताओ कि क्या तुम अपने हाथ से अपने वीर्य को नष्ट करते हो। उसने मान लिया। इसलिये मैं आप लोगों से कहा करता हूं कि अपने बच्चों को नाम दीक्षा दिलाने के बजाय उनका आचरण बनाओ। राम नाम तो बहुत दूर है। विषय भोग कम करो। अधिक विषय भोग से या तो तुमको साधू लूटेंगे या डाक्टर लूटेंगे और तुम्हारे जीवन का प्रभाव तुम्हारे बच्चों पर भी पड़ेगा।

ऐ दाता! आपने मुझे काम दिया था। मेरे दिमाग में आपने जैसी प्रेरणा की मैंने वैसा किया। मैं ने आपके रूप में असलियत को माना था। अब प्रार्थना है कि आप मुझे अपनी गोद में ले लीजिये।

मित्रो! मैंने कुछ नहीं किया। यह मौज का खेल है। मैंने अपनी नीयत से मकड़ी का जाला नहीं तना। मेरे सिर पर गुरु ऋण था। मैंने उसे पूरा किया।

सत्संगियों के लिये साधारण हिदायतें

(ले०—महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज)

(६) अभ्यास

साधन या अभ्यास केवल साधन या जरिया है! सारी आयु साधन या अभ्यास में रहना अनावश्यक और अनुचित है तथा लाभदायक भी नहीं है

वरन् आदमी कर्मकाण्डी बन जायगा और आध्यात्म का उद्देश्य नष्ट हो जायगा। साधन के लिए अधिक से अधिक छः महिने अथवा एक दो वर्ष पर्याप्त हैं। अधिक समय नष्ट करना ठीक नहीं।

(७) साधन के मरहले

एक जन्म गुरु भक्ति कर जन्म दूसरे नाम।
जन्म तीसरे मुक्ति पद, चौथे में निज धाम॥

कुछ दिनों तक सत्संग करो। यह गुरु की सेवा में रहने का जन्म है। जब मन से संशय भ्रम दूर हो जांय, नाम के साधन में लगो। यह शब्द अभ्यास है। इसकी कमाई को करके इसके अभ्यासी हो जाओ। जब देखो तुम्हारे अन्दर अध्यात्म (रूहानियत) ने अधिकार पा लिया तब जो जीवन के नियमित काम हैं उन्हें साधारण रूप से करते रहो। इस बात का ख्याल रहे कि आया इस काम में तुम्हारा अहंकार या अपनापन कहाँ तक प्रभाव रखता है और निर्भयता कहाँ तक अपने हाथ पांव संभालती है। अभिप्राय यह है कि सम्बन्ध और असम्बन्ध साथ-साथ हों और उस सम्बन्ध और असम्बन्ध के साथ-साथ साधन का रूप बदला हुआ होगा। साधन तो सूक्ष्म रूप में मौजूद रहेगा और वह केवल इस कारण से होगा कि तुम सावधान बने रहो और दुनियां का कोई प्रभाव तुम्हारे चित्त पर न आने पावे। न दुख हो न सुख हो, न गर्व हो न दीनता हो। न मान का ख्याल हो और न अपमान का। न किसी की प्रशंसा और न किसी की निन्दा। हाँ, यदि अभी तक कमजोरी प्रतीत होती है तो अपने मन की निन्दा और गुरु की प्रशंसा का ख्याल रहे। इस तरह जीवन मुक्त अवस्था प्राप्त हो जायगी और तुम आप समझ सकोगे कि तुम जीवन मुक्त हो या नहीं।

इस अवस्था के बाद निजधामी अवस्था आती है। यह अभ्यासी का चौथा जन्म है। इस अवस्था में पहुँचा हुआ अभ्यासी विदेह मुक्त कहलाता है। शरीर रखता हुआ बिना शरीर के है। बोलता हुआ बिना जिभ्या के है। काम करता हुआ बिना हाथ पाँव का है। सब कुछ करता है और कुछ भी नहीं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

नोट :—राधास्वामी मत का साधन सरल है। यदि अधिकार और संस्कार वाला अभ्यासी है तो सोच और समझ के साथ केवल छः महीने में अपना काम बना लेता है। यदि साधारण मन बुद्धि का आदमी है तो वह जीवन भर इसी में पड़ा रहेगा। और उसे अभ्यास का आनन्द न मिलेगा। साधारण आदमी की रीस न करो। यह किसी और हालत के लिए आये हैं। यह सब के सब कर्मकाण्डी हैं। उन्हें ज्ञान काण्ड प्राप्त नहीं हुआ। उपासना काण्ड की हवा तक नहीं मिली। साक्षात्कार काण्ड का तो कहना ही क्या है। यह तो जहाँ थे वहीं रहे। साधारण भक्ति भाव, चरणामृत पीने और परशादी खाने अथवा भंडारे और सालाना उत्सव मनाने के काम के लोग हैं।

नोट (२) :—सच्चे अभ्यासियों को चाहिए कि वह जहां मजिलें (स्थानों) और मरहले को अच्छी तरह समझलें, साथ ही सहसदलकंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भंवरगुफा और सतपद आदि के शब्दों के मन्तव्य को भी अच्छी तरह सत्संग में गुरु की जुबान से समझलें। इनमें कमी न रहने पावे वर्ना अभ्यास न बनेगा और संशय भ्रमों से कभी छुटकारा न मिलेगा।

नोट (३) :—यह छोटी-छोटी बातें हैं जो संक्षेप में यहाँ लिखी गई हैं। जुबानी बातचीत कम हों। साधन और अभ्यास से अधिक सम्बन्ध रहे। जब यह पूरा हो जाय तो केवल आत्मिक जीवन व्यतींत करने का ख्याल रहे। वह आनन्द का जीवन है इन तीनों को कथनी, करनी और रहनी कहते हैं।

करनी करे सो पुत्र हमारा, कथनी कथे सो नाती।
रहनी रहे सो गुरु हमारा, हम रहनी के साथी॥

आलू को भूरे सड़न रोग से बचाने के उपाय

केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के वैज्ञानिकों ने बताया है कि

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

रोग रहित बीज और सफाई अपनाने से आलू को भूरे सड़न रोग से बचाया जा सकता है।

सड़न रोग जख्मी जड़ों द्वारा पौधे में कीटाणु के प्रवेश से लग जाता है। ये कीटाणु गंदे थलों, कृषि औजार, सिंचाई की नालियों, बैलों आदि द्वारा फैलते हैं। इसलिये कृषि के औजारों और अन्य चीजों की मिट्टी के तेल या मियाइल स्प्रिट से रोगाणु रहित कर लेना चाहिए।

उत्तरी इलाकों के मैदानों में गर्मी के मौसम में ये कीटाणु नहीं बच पाते। फिर भी आलू का बीज वहीं से लें जहाँ भूरे सड़न की सम्भावन नहीं हो।

पहाड़ी इलाकों में इस रोग रोकथाम के लिए ४५० किलो प्रति हैक्टर की दर से गंधक मिट्टी में मिला दें। गंधक मिलाने के तीन महीने के बाद १,३५० किलो प्रति हैक्टर चूना मिला दें। अगर यह कुछ मंहगा लगे तो इस रोग के बचाव के लिए अनाज की फसलों के साथ दो-वर्षीय फसल चक्र अपनायें।

[कृषि मन्त्रालय]

❀ तीन बातों का महत्व ❀

तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती हैं—

(१) माँ (२) बाप (३) जन्म

तीन चीजें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं—

(१) समय (२) मौत (३) ग्राहक

तीन चीजें निकल कर कभी नहीं लौटतीं—

(१) तीर धनुष से (२) बात जवान से (३) प्राण शरीर से।

तीन चीजों का साथ कभी न छोड़ो—

(१) दया (२) क्षमा (३) विनय।

तीन बातों से बचो—

(१) अपनी प्रशंसा (२) दूसरों की निन्दा (३) परदोष दर्शन।

दयाल फकीर कृत पुस्तकें

मानव धर्म प्रकाश हिन्दी	-७५
आवागवन उर्फ़ जीवन रहस्य हिन्दी	१-००
आवागवन उर्फ़ जीवन रहस्य उर्दू	-७५
मनुष्य बनो हिन्दी	-७५
जगत कल्याण हिन्दी	-७५
जगत उभार	१-००
आकाशीय रचना	.५०
फकीर वचनामृत	.४०
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेट भाग १—२	२-२५
कर्मभोग या मौज भाग १,२,	१-७५
५० वर्षीय फकीर अनुभव	.५०
संत सतगुरु वक्त	१-५०
उन्नति मार्ग	-२५
विश्व धर्म भाग १ व २	१-७५
गुरु महिमा	१-००
अजायब पुरुष	१-००
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१-२५
आदि अन्त	१-२५
सारतत्व सचाई और शान्ति	१.००
अगम विकाश	१-००
सतज्ञान दाता भाग १, २	२·००
ज्ञान योग	१·००

नाम दान	
सार का सार भाग १,२	
मानवता युग धर्म	
निष्कलंक अवतार हिन्दी	.५०
मानव कल्याण भाग १,२,३,४,५	५.००
गरुण पुराण रहस्य	१.५०
अद्भुत मोती	.७५
आजादी की कुंजी	.५०
गुरु वन्दना	.६५
कबीरसागर शब्द व्याख्या	१.००
शिव फकीर पत्रावली	१.२५
हृदय उद्गार	१.००
अगम वाणी भाग १,२,३ प्रति	१.००
सुरत शब्द योग	१.००
सत सनातन धर्म अथवा— सत मानव धर्म	३.००
निर्वाण से परे	१.००
रचना का भेद	.७५
बेहद्दी या अपार के परे	१)२५
ईश्वर दर्शन	१)
मेरी धार्मिक खोज	१.२५
अपार के परे	१·२५
बारहमासा की व्याख्या	२·००

महर्षि शिवब्रतलाल कृत पुस्तकों की सूची

महर्षि शिव की जीवनी उर्दू	५.००
दयाल योग ,,	२.५०
विवेक कल्पद्रुम	१.५०
सफलता के साधन हिन्दी	.५०
अन्तर्मुखी	.५०
धर्म सन्देश	.५०
गुप्त रहस्य	१.००
जैन वृतान्त	.७५
नवजीवन सुधार	१·००

मूर्ति पूजा रहस्य	०.२५
सत्य सनातन आर्य धर्म	१.२५
रहिमन नीति दोहावली	.५०
योग आसन	.२५
सप्त ऋषि वृतान्त	.७५
राजस्थान की ललित ललनायें	१.००
सत्संग के ८ वचन	०.७५
पाँच नाम की व्याख्या	१.२५
हितोपदेश	.५०

...जिल्द	७-००
... भाग १ व २	२-५०
नानक योग	४-००
राधास्वामी योग	६-००
कबीर योग भाग १,२,३	५-१५
कर्मयोग रहस्य	१-००
Light on Anand Yog	३-००
आनन्द योग प्रकाश	२-५०
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	२-००
कबीर की साखी	२-००
पंथ सन्देश	३-००
शब्द गुञ्जार भाग १,२ ३	४-५०
विचार शक्ति अथवा मनोविज्ञान	१-५०
विचार दर्पण	१-००
फकीर भजनावली	१-००
जीवन सुधार	१-२५

शिक्षाप्रद, रोमांचकारी मोती और ...ही सिलसिले के उपन्यास हैं

नई पुस्तकें

निर्वाण	१-००
सहज भक्ति	१-००
उस पार की [illegible]	१-००
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१-००
हिंसक मोती	१-००
ज्ञान योग	१-५०

ग्राहक सं० 327

श्रीमान् Sri C. Bagraj Myskor Pandit
Rathode Building
Pochamma Gali
Jumerat Bazar
Mirzapur

प्रेषक— सम्पादक व प्रकाशक
देवीचरन मीतल
सेवराज नगर,
अलीगढ़।

Printed by S.C. Mital, Dayal Printing Press, Aligarh

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

शुभ संकल्प,